RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021

शिव आमंत्रण
आध्यात्म की नई उड़ान
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

10
बाहर नहीं हमें खुद को बदलने की जरूरत है

14
इंजीनियरिंग, बीटेक, नर्सिंग, के बाद अपनाई आध्यात्म...

वर्ष ▸ 09 | अंक ▸ 11 | हिन्दी (मासिक) | नवंबर ▸ 2022 | पृष्ठ ▸ 16
मूल्य ▸ ₹ 12.50

प्रकृति संरक्षण ▸ ब्रह्माकुमारीज़ ने सौ एकड़ में 18 साल में 16 हजार पेड़-पौधों का खड़ा कर दिया वन

प्रकृति के सुंदर रूप को अपने आंचल में समेटे 'तपोवन'

दुबई के खजूर, नागपुर के अंगूर ने घोली मिठास | लगन: मेहनत से रेगिस्तान में खड़ा कर दिया पेड़ों का जंगल

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान मानव मन से लेकर प्रकृति संरक्षण की दिशा में नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। संस्थान के आबू रोड स्थित अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय में बीके भाई-बहनों की अथक मेहनत, लगन और परिश्रम से सौ एकड़ के विशाल परिसर में पूरा का पूरा जंगल ही खड़ा कर दिया गया है। इसका नाम है 'तपोवन'। जहां आम से लेकर अमरुद और अंगूर से लेकर दुबई के खजूर, काजू-बादाम के 16000 हजार पेड़-पौधे खड़े कर दिए हैं। वर्ष 2003 में प्रकृति संरक्षण के इस महाभियान की नींव रखी गई थी। तमाम विपरीत परिस्थितियों के बाद भी आज यहां की हरियाली हर किसी का मन मोह लेती है। तपोवन परिसर पर शिव आमंत्रण की विशेष रिपोर्ट....

प्राकृतिक-यौगिक खेती का शोध केंद्र

सबसे मुख्य बात ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा वर्ष 2007 में शुरू किए गए शाश्वत यौगिक खेती पद्धति के शोध केंद्र के रूप में तपोवन परिसर से ही शुरुआत की गई। यहां दस एकड़ जमीन में गेहूं, चना, सब्जियां आदि फल और अनाज की फसलों पर शोध कार्य किए जाते हैं। हर गुरुवार को यहां राजयोगी भाई-बहनों की टीम फसलों के बीच बैठकर राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से शुभ संकल्प देते हैं। राजयोग से परमात्मा से शक्ति लेकर उन्हें प्रदान करते हैं। इसके आश्चर्यजनक परिणाम आए हैं।

दुबई का खजूर घोल रहा मिठास

यहां की सबसे बड़ी खासियत है दुबई से लाए गए विशेष खजूर के पेड़। पूरे परिसर में 400 दुबई के खजूर के पेड़ लगे हैं। इनका खजूर बहुत ही स्वादिष्ट और मीठा होता है। जून माह में एक खजूर के पेड़ से 20 किलो फल निकलते हैं। सामान्यतः राजस्थान की जलवायु खजूर के पेड़ों के लिए उपयुक्त नहीं है लेकिन बीके भाइयों के प्रयासों और लगन से यह संभव कर दिखाया है। इन पेड़ों को बड़ा करने में प्रकृति की तमाम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। यह पेड़ संस्थान के राजस्थान सरकार की ओर से उपलब्ध कराए गए हैं। विपरीत मौसम के बाद भी खजूर के पेड़ों को विकसित करना अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।

शेष पृष्ठ 2 पर ▸

यहां जैविक तरीके से उगाई जाती हैं सब्जियां-

यहां सभी तरह की सब्जियां लौकी, तुरई, गिलकी, आलू, टमाटर, भिंडी, फूलगोभी, पत्तागोभी, करेला, मिर्च, कद्दू, ब्रोकली, धनिया, गाजर, चुकंदर, ब्रोकली, हल्दी, पालक, मैथी, बथुआ, गाजर, शकरकंद, बरबटी, परवल, टिंडा कुंदरू, वाड़ा कर्वी, ककड़ी, बैंगन, कनकोड़ा, ग्वारफली, मूंगफली, करौंदा आदि लगभग सभी तरह की सब्जियां जैविक तरीके से उत्पादित की जाती हैं। सब्जियों में विशेष रूप से शिमला मिर्च प्रसिद्ध है। एक शिमला मिर्च का वजन 250 ग्राम तक होता है। तपोवन को सुंदर रूप देने के लिए एक तालाब भी बनाया गया है, जिसमें चार बदख इसकी शोभा को चार चांद लगा देती हैं। इसके साथ ही मोर को भी यदा-कदा पंख फैलाकर नाचते हुए देखा जा सकता है।

400 पेड़ ड्रेगन फ्रूड के लगाए गए हैं

25+ तरह के फल-फूल के पौधे लगे

10+ एकड़ जमीन पर यौगिक खेती

50+ तरह के जड़ी-बूटी के पौधे लगे

100 एकड़ में फैला है विशाल 'तपोवन'

16000 हजार पेड़-पौधे पूरे परिसर में लगाए गए

प्रकृति > विपरीत परिस्थितियों के बाद भी अंगूर, बादाम, काजू के पेड़ उगाए

प्रकृति का सानिध्य और योग की अनुभूति कराता 'तपोवन'

सैकड़ों वैराइटी के एक हजार आम के पेड़-

तपोवन में देशभर की प्रसिद्ध आम की कई वैराइटी जैसे हापुस, लंगड़ा, देशी, कलगी, रितुआम, केसरी, दशहरी, तोतापरी, सिंधुरा आदि आम के एक हजार से अधिक पेड़ लहलहा रहे हैं। इसके अलावा 420 विभिन्न किस्म के जामुन के पेड़ लगे हैं। साथ ही देशभर के अलग-अलग वैराइटी के 300 अमरूद के पेड़, 28 पेड़ काजू, 30 पैर बेल के भी लगाए गए हैं।

चीकू-संतरा के पेड़ भी लगाए गए-

तपोवन में हाई क्वालिटी का नासिक से लाया गया अंगूर भी लगाया गया है। इसकी तीन वैराइटी हैं गोल, काला और सफेद लंबा। राजस्थान की मरु भूमि में अंगूर की खेती करना किसी चुनौती से कम नहीं है। लेकिन बीके भाइयों की मेहनत से यह साकार हो सका है। साथ ही 700 केला के पेड़, 400 ड्रैगन फ्रूट के पेड़, 300 केला के पेड़, 50 मौसंबी के पेड़, 100 नींबू के पेड़, 150 फालसा के पेड़, 50 सहजन के पेड़, 150 चीकू के पेड़, 500 संतरा के पेड़, 200 नीम के पेड़, 30 एप्पल के पेड़, 200 अनार के पेड़, 200 आंवला के पेड़, 20 अंजीर के पेड़, 20 सेव और 20 बादाम के पेड़ और 350 सागवान के पेड़ भी लगाए गए हैं। साथ ही पीपल, वरगद के पेड़ भी लगे हुए हैं।

इलाहाबादी अमरूद का स्वाद सभी को मोह लेता है

पूरे तपोवर में दुबई का खजूर और इलाहाबादी अमरुद सभी के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। इनकी मिठास सभी का मन बरबस ही मोह लेती है। वहीं सेब, संतरा, अनार, लीची, चीकू, तरबूज, खरबूज, पपीता, काजू, बादाम, एप्पल बेर से लेकर फूलों में चंपा, चमेली, रजनीगंधा, मोगरा, 12 तरह के गुलाब, पारिजात, रातरानी यहां की सुंदरता में चार चांद लगा देते हैं। वहीं जड़ी-बूटी में अमलतास, गोखरू, अंजीर, दूधी हरसिंगार, पुनर्नवा, अश्वगंधा के पौधे भी लगाए गए हैं।

गौशाला में 35 गिरी गाय-

यहां बनी गौशाला में 35 गिरी गाय भी हैं। जिनके गोबर और मूत्र का उपयोग जैविक खाद बनाने में किया जाता है। साथ ही गायों से प्राप्त शुद्ध और पौष्टिक दूध संस्थान में उपयोग किया जाता है। गायों सहित पूरे परिसर की देखरेख और रखरखाव के लिए 70 श्रमिक पूर्ण कालिक सेवाएं देते हैं। साथ ही परिसर की सुरक्षा के लिए सुरक्षा गार्ड भी तैनात किए गए हैं। पर्यटकों की सुविधा के लिए चार इलेक्ट्रॉनिक बग्गी गाड़ी रखी गई हैं। ताकि सभी आसानी से पूरा परिसर देख सकें। यहां आने वाले पर्यटकों का स्वागत हर्बल टी के साथ किया जाता है।

सोलर पैनल से जगमगाता है परिसर, मोटर पंप भी चलते हैं-

इको फ्रेंडली रूप से विकसित किए गए परिसर में प्रकृति संरक्षण के हर पहलू को ध्यान में रखा गया है। इसे लेकर यहां सोलर पैनल सिस्टम लगाया गया है। जिससे यहां रात में हैलोजन और लाइट जलती है। साथ ही ट्यूबबेल में मोटरपंप से सोलार से चलाया जाता है। इससे हर महीने सैकड़ों यूनिट बिजली की बचत होती है। साथ ही यहां रहने वाले भाइयों के लिए भोजन और गर्म पानी भी सोलार के माध्यम से ही गर्म किया जाता है।

हजारों किसानों ने यौगिक खेती पद्धति को अपनाया है और दोगुना मुनाफा कमा रहे हैं।

ड्रिप पद्धति से होती है सिंचाई-

यहां खेती सहित फल-सब्जियों के पेड़-पौधों को पानी ड्रिप द्वारा दिया जाता है, इससे जहां पानी की बचत होती है, वहीं पेड़ों को पर्याप्त पानी भी मिलता है। पूरे परिसर को सुव्यवस्थित तरीके से विकसित किया गया है ताकि इसकी सुंदरता बनी रहे और आने वाले पर्यटकों को सभी चीजें समझने और देखने में भी सुविधा हो।

किसानों को दिया जाता है यौगिक खेती का प्रशिक्षण-

तपोवन में बने किसान प्रशिक्षण सेंटर में समय प्रति समय देशभर से आने वाले किसानों के दल को कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की ओर से यौगिक खेती का दस दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया जाता है। इस प्रशिक्षण का लाभ लेकर अब तक हजारों किसानों ने यौगिक खेती पद्धति को अपनाया है और दोगुना मुनाफा कमा रहे हैं।

रोज गार्डन में दस वैराइटी के फूल लगे-

तपोवन परिसर में ही बनाए गए रोज गार्डन से रोजाना फूल निकलते हैं। इनका उपयोग शांतिवन में मेडिटेशन रुम, सजावट आदि में उपयोग किया जाता है। इनमें दस वैराइटी के गुलाब के फूल लगाए गए हैं। गार्डन का निर्माण संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी गुलजार की स्मृति में उनके ही नाम पर किया गया था। गार्डन से महीनेभर में 25-30 हजार रुपये कीमत के गुलाब के फूलों का उत्पादन होता है।

हर गुरुवार को होती है विशेष योग तपस्या

चूंकि तपोवन परिसर को संस्थान के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की ओर से अनुसंधान केंद्र के रूप में विकसित किया गया है ताकि यहां पर यौगिक खेती के नए-नए प्रयोग किए जा सकें। यहां हर गुरुवार को बीके भाई-बहनों की टीम शाम को 6.30 बजे से 7.30 बजे तक पेड़-पौधों के बीच बैठकर राजयोग मेडिटेशन करती है। राजयोग के माध्यम से ये साधक जहां पेड़-पौधों से बातें करते हैं वहीं उन्हें शुभ संकल्पों का दान करते हुए परमात्मा से शक्ति लेकर उन्हें देते हैं। वर्षों से चल रहे इस शोध कार्य में सामने आया है कि जिन सब्जी या फसल को यौगिक खेती के तहत उगाया गया वह ज्यादा पौष्टिक, स्वास्थ्यवर्धक रही। उसका स्वाद रासायनिक खेती की अपेक्षा ज्यादा बेहतर पाया गया। इसके अलावा यहां मेडिटेशन से पूरे तपोवन परिसर के माहौल में दिव्य सकारात्मक ऊर्जा को महसूस किया जा सकता है। प्रकृति के साथ-साथ के कारण यहां के माहौल में एक अलग ही आबो-हवा है। जिसकी अनुभूति यहां आने वाले पर्यटक करते हैं।

सभी तरह की सब्जियां और फल से बढ़ी शोभा

तपोवन के निदेशक बीके रमेश भाई ने बताया कि यहां निःशुल्क रूप से बीके भाई अपनी सेवाएं देते हैं। बेहतर तरीके से पेड़-पौधों की संभाल, बीमारियों की परख के लिए उन्हें देश के अलग-अलग स्थानों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। कृषि विशेषज्ञों टीम समय प्रति समय पेड़-पौधों की जांच और उपचार के लिए गाइड करती है। जिन फलों के पेड़ों की प्रकृति यहां के वातावरण के अनुकूल नहीं है उन्हें बड़ा करने में बहुत ही परेशानी का सामना करना पड़ा। लेकिन हमारी टीम ने हार नहीं मानी और सफलता हासिल की। हर फल-सब्जी के पेड़-पौधों की अपनी अलग प्रकृति होती है।

कॉम्पटीशन] ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय में नेशनल पेंटिंग कॉम्पटीशन एवं वर्कशॉप आयोजित

कलाकारों ने कैनवास पर मन के भावों को किया साकार

300+
कलाकारों ने देशभर से लिया भाग

04
विधाओं में बनाई गई पेंटिंग

12
श्रेष्ठ कृतियों के रचनाकारों को किया पुरस्कृत

04
दिन चला आयोजन

विजेता कलाकारों का शील्ड देकर किया गया सम्मान।

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मनमोहिनीवन परिसर में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर थीम के तहत चार दिवसीय नेशनल पेंटिंग कॉम्पटीशन एवं वर्कशॉप का आयोजन किया गया। चार विधाओं में आयोजित इस कॉम्पटीशन में देशभर से 300 कलाकारों ने भाग लिया। वहीं चारों विधाओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पाने वाले कलाकारों को पुरस्कृत किया गया। वहीं 20 कलाकारों को भी श्रेष्ठ रचनाओं पर सांत्वना पुरस्कार दिए गए। प्रतियोगिता में जज के रूप में दिल्ली से संगीता राज, बड़ौदा से अतुल पडिया और कोलकाता से ब्राटिन खान ने भूमिका निभाई।

इन चार थीम के आधार पर किया सिलेक्शन

01 स्प्रीचुअल इंडिया थीम

इसके तहत भारत की आध्यात्मिक विरासत, आध्यात्मिक गुरु, संस्कृति, योग-ध्यान, साधना का संदेश देतीं पेंटिंग बनाई गईं। इसमें प्रथम पुरस्कार महाराष्ट्र मुंबई के देवेंद्र शंकरराव को, द्वितीय यूपी मेरठ से अंश सुल्तान और तृतीय पुरस्कार हैदराबाद से माडीलेठी कूरवा को प्रदान किया गया।

02 कल्चरल हेरिटेज इंडिया थीम

भारत के पुरातात्विक स्थल, ऐतिहासिक स्थल, सभ्यता को इस थीम के तहत कलाकारों ने आकार दिया। प्रथम पुरस्कार प्राइमबलूर के अजीत शेट्टी, द्वितीय थलाईवशाल के आर शिवासेलन और तृतीय पुरस्कार चेन्नई की डायना सतीश को प्रदान किया गया।

03 स्वर्णिम भारत थीम

इसके तहत स्वर्णिम भारत की तस्वीर उकेरी गई, जहां चारों ओर सुख-शांति और स्वर्णिम दुनिया। सोने के महल, सभी सुखी-संपन्न हों। इसमें प्रथम पुरस्कार आगरा के पलास अवस्थी, द्वितीय दिल्ली के पंकज हरजाई तथा तृतीय गुलबर्गा के राजशेखर समाना को प्रदान किया गया।

04 पोर्ट्रेट थीम

इसके तहत आध्यात्मिक जगत की हस्तियों स्वामी विवेकानंद, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी के साथ संस्थान के संस्थापक ब्रह्मा बाबा, पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि और वर्तमान मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी की पोर्टेट बनाई। इसमें प्रथम विजेता गोवा से अंकिता नायक, द्वितीय चित्तौड़गढ़ से सतीश विश्वकर्मा और तृतीय विजेता चित्तौड़गढ़ से मुकेश विश्वकर्मा रहे।

इन कलाकारों को दिया सांत्वना पुरस्कार

आरंग से गौरव कुमार पटेल, रायपुर से अभिलाष देवांग, भावनगर से विपिन दवे, कोटा से शैलेंद्र कुमार जोशी, अहमदाबाद से मुकेश कुमार पटेल, दिल्ली से हरीश यादव, दिल्ली से सुमन, श्रीगंगानगर से साहिल, भिलाई से चित्रा, पुणे से गोपाल, इटावा से सत्यम, रेवाड़ी से कपिल, सूरत से ढोलकिया मुकेश, औरंगाबाद से प्रकाश बालाजी, कालाबुरागी से नागराज, नवी मुंबई से पूजा, नोएडा से अंजुम परवीन, थाने से नेहा, अहमदाबाद से तेजस्वी और उदयपुर से रितिक की बेहतर पेंटिंग पर सम्मानित करते हुए सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

दादी प्रकाशमणिजी के पोर्टेट को अंतिम रूप देता कलाकार।

परमात्मा हैं परम कलाकार

परमात्मा को परम कलाकार कहा जाता है। कला परमात्मा की देन है। कला में वह ताकत होती है जिस बात को हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते हैं उसे कला के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकते हैं। कलाकार एक साधक भी होता है, क्योंकि बिना साधना के कला संभव नहीं है। इसमें असीम धैर्य के साथ लगन, जुनून का होना जरूरी है। इस कॉम्पटीशन का मकसद कलाकारों को कला के साथ-साथ आध्यात्म और मेडिटेशन से जोड़ना है ताकि उनकी कला में और निखार आ सके।

– डॉ. बीके मृत्युंजय, आयोजक, पेंटिंग कॉम्पटीशन व कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़, संस्थान

कलाकारों जो भाग लेने पहुंचे

01

हरियाणा के कुरुक्षेत्र से आए कलाकार राहुल वर्मा ने बताया कि मैं पिछले चार साल से देश के अलग-अलग स्थानों पर पेंटिंग कॉम्पटीशन में भाग ले रहा हूं। पेंटिंग मेरी हॉबी है। मेरा प्रोफेशन आईटी का है। मुझे बचपन से ही पेंटिंग बनाने का शौक है। राहुल राजयोगिनी दादी गुलजार की पेंटिंग बनाया।

02

मुंबई से आईं रिटायर्ड प्रोफेसर 64 वर्षीय अंजली गवली ने बताया कि मेरा बचपन से ही पेंटिंग पैशन और जुनून रहा है। इसलिए मैंने कॉलेज में भी पेंटिंग विषय पढ़ाया। गवली आजादी के अमृत महोत्सव की झलकियां दिखाते हुए आत्मा के सातों चक्र और ब्रह्मा बाबा की पेंटिंग को आकार दिया।

03

छग से आईं आर्ट टीचर प्रतिभा महाराणा ने बताया कि मेरी खुद की आर्ट गैलरी है। हाल ही में सरकार ने उन्हें बेस्ट आर्ट टीचर के सम्मान से सम्मानित किया है। साथ ही यूपी सरकार की ओर से कला रत्न अवार्ड सहित अब तक 90 से अधिक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय अवार्ड प्राप्त कर चुकी हैं। टीचर महाराणा पेंटिंग में शिवलिंग, शंकर जी और योगी की आकृति को आकार दे रही हैं। जिसका उद्देश्य है कि आध्यात्म में तीन चीजें महत्वपूर्ण हैं-साधना, आत्मचिंतन और ध्यान। इन तीनों बातों को उन्होंने शामिल किया है।

हर कर्म कला के रूप में हो तो उनके हर कर्म अर्थात् गुणों का गायन होता है

प्रेरणापुंज

दादी गुलजार (हृदयमोहिनी)
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

मेरा हर बच्चा मेरे समान बने, बाबा की यही आस है

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। परमात्म-प्यार ही निःस्वार्थ प्यार है, इसके रिटर्न में सिर्फ समान बनो। शिवबाबा व ब्रह्मा बाबा से हम सबका कितना प्यार है? वर्णन कर सकते हैं, कितना प्यार है? इस दुनिया में कोई दृष्टान्त ही नहीं है। एक गीत है - सागर से गहरा, गगन से ऊंचा तेरा प्यार है... लेकिन यह भी अंचता नहीं है क्योंकि इस दुनिया का दृष्टान्त बाबा से लगता ही नहीं है। वह बहुत ऊंचा है लेकिन प्यार सबका है और उसी प्यार ने ही यहां तक लाया है। तो हम सभी से बाबा क्या चाहता है? हम सब बच्चों में बाबा की एक ही आश है, वह क्या है ? बाबा की हम सब बच्चों में यही आश है कि मेरा एक-एक बच्चा मेरे समान बन जाए। इतना प्यार कोई बाप कर सकता है! परमात्म-प्यार की कितनी विशेषताएं हैं- निःस्वार्थ प्यार है। वैसे आत्माओं का आत्माओं के साथ प्यार तो होता है लेकिन उसमें स्वार्थ भरा हुआ होता है। चलो, वर्तमान नहीं हो तो भविष्य। आगे चल करके यह करेगा, वह करेगा... कोई ना कोई स्वार्थ होता है। आजकल के दुनिया में तो प्यार नहीं है, है ही स्वार्थ। लेकिन परमात्म प्यार निःस्वार्थ है। क्योंकि बाबा को स्वार्थ किस चीज का हो, वह खुद ही दाता है तो दाता देने वाला होता है। उसको हमसे चाहिए क्या और हमारे पास ऐसा है भी क्या जो वह हमसे स्वार्थ रखे। हां, कल्याण की भावना जरूर रखता है कि मेरे बच्चों में जो अवगुण हैं, जो कमियां हैं वह मेरे को दे दें। कोई ऐसा बाप देखा! जो और कोई स्वार्थ नहीं रखे, लेकिन कल्याण की भावना रखे कि इसकी कमजोरी मैं ले लूं। यह श्रेष्ठ बन जाएं और उसके लिए देखो, बाबा रोज महावाक्य उच्चारण करते हैं। ऐसा कोई पिता देखा होगा जो बच्चों को रोज पत्र लिखे। लक्ष्मी-नारायण भी नहीं लिखेगा। लेकिन एक ही परमात्मा पिता है जो रोज तीन पेज का पत्र भेजता है। मुरली क्या है? पत्र। इतना प्यार से और इतना बड़ा पत्र बैठके बाबा रोज लिखे, यह कोई कम है। ऐसा बाप देखा कभी, सारे कल्प में मिला कोई ऐसा। हमारा बाबा ऐसा है, इसको कहा जाता है 'परमात्म-प्यार। ऐसा वरदाता भी कोई नहीं देखा होगा, चाहे गुरु लोग वरदान देते हैं लेकिन रोज वरदान देंवे, ऐसा गुरु देखा है। ऐसा टीचर जो इतनी दूर से पढ़ाने आए। परमधाम कितना माइल है? गिनती कर सकते हैं? लेकिन हमारा टीचर रोज परमधाम से हमारे लिए आता है। हरेक कहेगा - हमारे लिए, यह नहीं कि फलानी दादियों के लिए आता है, इसके लिए आता है... हमारे लिए आता है। हम कभी कारण-अकारण मिस कर भी लेवें लेकिन बाबा कभी मिस नहीं करता। कितने समय से और कितना एक्यूरेट हमारा टीचर हमको शिक्षा दे रहे हैं। किसी का भी टीचर इतना दूर से रोज आवे, ऐसा टीचर भी कभी नहीं देखा। बाबा का बच्चों से इतना प्यार है जो पत्र में शुरू से लेके अन्त तक कितनी बार मीठे बच्चे, मीठे बच्चे, मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे, लाडले बच्चे...कहता है।

अतीन्द्रिय सुख का यह जीवन नहीं भूल सकते

» शिव आमंत्रण, आबू रोड । अब हम ब्रह्ममुख वंशावली अर्थात् ब्रह्मा बाबा के मुख से (मुख द्वारा दिए गए ज्ञान से) पैदा हुए ब्राह्मण, ब्रह्माकुमारी-ब्रह्माकुमार कहलाए। यज्ञ-पिता और यज्ञ-माता द्वारा ही लालन-पालन और हमारी शिक्षा शुरू हुई। बड़ी आयु होते हुए भी अब फिर से इस ईश्वरीय गुरुकुल में हमारा न्यारा, प्यारा और निश्चिंत विद्यार्थी जीवन प्रारंभ हुआ और ईश्वरीय विद्या के अध्ययन में ही व्यस्त हम ब्रह्मा बाबा तथा सरस्वती मैया के रूहानी धर्म के बच्चे बने। अहा! इस अलौकिक जीवन के सुख का क्या वर्णन करें। नित्य प्रति ज्ञान की मीठी-मीठी बातें सुनते, अलौकिक और पारलौकिक माता-पिता का निःस्वार्थ और आत्मिक स्नेह पाते ईश्वर अर्पण हुए धन से, सच्चे ब्राह्माणों द्वारा बनाया पवित्र ब्रह्माभोजन लेते, ईश्वरीय कुटुंब में रहते, हमारा यह नए प्रकार का बचपन तो हमें कभी स्वप्न में भी नहीं भूल सकता। अतीन्द्रिय सुख वाला यह जीवन भी सभी ब्रह्मा-वत्सों ने पाया। परन्तु मेरा जो चौथा जन्म हुआ, वह किसी-किसी ने ही पाया।

एक बार मेरे जीवन में फिर पलटा आया। शिव बाबा ने यज्ञ-वत्सों को और यज्ञ-माता और यज्ञ-पिता को यह अनुभव कराना था कि सतयुग में देवताई जीवन कैसा होगा। उस समय के संस्कार कैसे होंगे और खान-पान आदि की रीति कैसी होगी। अतः उस करन-करावनहार,

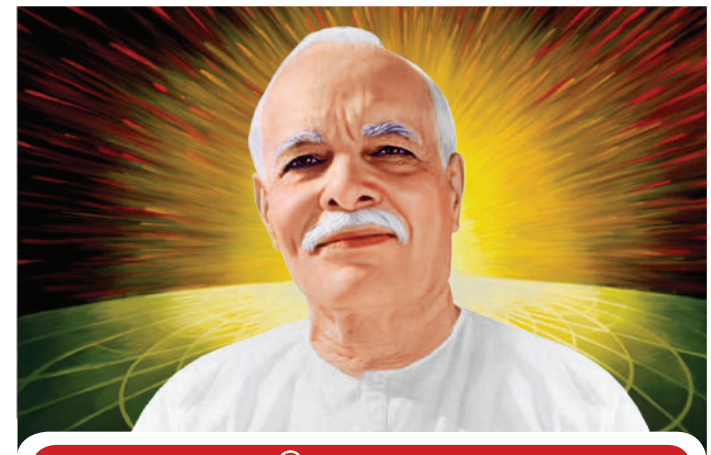

रियल लाइफ

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा
संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

बाबा ने अनुभव कराया कि सतयुग में देवताई जीवन कैसा होगा

दिव्य-दृष्टि के दाता, दिव्य दृष्टि विधाता प्रभु ने मुझे एक और जन्म दिया। कैसे? अनायास ही एक दिन मुझे शिव बाबा ने विशेष प्रोग्राम दिया। उसके अनुसार, मैं अलग ही एक कमरे में कई दिन तक रही। मुझे भोजन करने के लिए मना थी। थोड़ा फल और दूध लेती थी और न किसी की बात सुनती थी, न किसी से करती थी और न किसी अज्ञानी व्यक्ति को देखती थी। निरन्तर योगाभ्यास की आज्ञा मुझे मिली हुई थी। एक सूर्यमुखी फूल की तरह मेरी दिनचर्या थी। शिव बाबा की याद ही मेरा एक मात्र काम था, बस! इस प्रोग्राम के परिणामस्वरूप मेरे इस जीवन के सभी संस्कार मर्ज हो गए। इस संसार की सभी स्मृतियां गुम हो गईं। सभी दैहिक नाते भूल गए और दृष्टि-वृत्ति सब पलट गई। मैं जीती-जागती तो थी परन्तु मुझे अपनी देह का नाम, आयु वा परिचय कुछ भी याद न रहा। मेरे जो लौकिक संबंधी थे, उनकी भी मुझे पहचान और स्मृति न रही। यहां यज्ञ में आने के बाद जो मेरे दिव्य संबंधी अर्थात् यज्ञ निवासी भाई-बहन थे, इनके भी नाम आदि मुझे सब भूल गए।

और मैंने खुद को छोटी कन्या के रूप में अनुभव किया...

मैं ने अपने आपको भविष्य की सतयुगी सृष्टि की एक दैवी राजकुल की बहुत छोटी-सी कन्या के रूप में अनुभव किया। वहां की ही भाषा और बोलचाल मेरे मुख से धीमे-धीमे स्वर से निकलती थीं। वहां के देवी-देवताओं जैसे ही सतोप्रधान संस्कारों का मेरे मन में प्रादुर्भाव हुआ। मैं काम, क्रोध, लोभ आदि का अर्थ, व्यवहार या विचार जानती तक न थी। इस कलियुगी संसार की भाषा, चेष्टा, हाव-भाव, रीति-रस्म आदि को समझती तक न थी। दिन तक इस प्रकार अल्प भोजन पर कैसे चलेगा? परन्तु मुझे कुछ भी कमजोरी अनुभव नहीं होती थी। एक छोटी-सी दैवी शहजादी की तरह ही मेरी चाल-ढाल, मेरा खान-पान और मेरा सारा व्यवहार था।

हर आत्मा पुरुषार्थी है इसलिए सदा सबमें गुण ही देखें

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। अजीब लगता है बाहर तो इतना ऐसा सोचा था लेकिन बाबा के सामने आते ही सब संकल्प शान्त हो गए। बाबा कहते थे - बच्ची, कुछ बोलो। बाबा अपने प्यार की शक्ति से, शान्ति की शक्ति से हमारे मन को शान्ति का अनुभव करा देते थे। समझो मैं किसी की गलती बाबा को सुनाती हूं-फलाना ऐसा है, फलाना ऐसा है तो बाबा उसी समय रियलाइज करा देता था कि यह उनकी बात नहीं सुना रही हो लेकिन अपनी सुना रही हो। तुम्हारे मन में क्या चलता है, वह सुना रही हो। सोचते हैं कि हम अच्छी बातें सुना रहे हैं। लेकिन बाबा कहते यह भी बहुत-बहुत प्रकार के व्यर्थ चिंतन के पिंजरे में पंछी फँस जाते हैं। वहां से निकलना मुश्किल हो जाता है। फिर उड़ती कला का अनुभव नहीं होता है। सेकंड में साइलेंस नहीं होते हैं। बाबा कैसे एक मिनट में सबको साइलेन्स करा देता है। यह सीन बहुत प्यारा लगता है। उस समय जी चाहता है हम सब ऐसे ही बैठे रहें। हम भी ऐसे बाबा जैसे काम कभी करते हैं, यह अन्दर सोचो। इसके लिए- सी फादर, फालो फादर। अगर यह नहीं किया तो सेवा क्या है। सेवा साथियों को मेरे से क्या फायदा है।

बाबा ने हमारी सब जवाबदारियां अपने ऊपर उठा लीं। कहता है-बच्ची तुम निश्चिंत रहो, तेरा पालनहार तुमको पढ़ाने वाला, साथ ले जाने वाला, मैं बैठा हुआ हूं। मैं तेरा साथी हूं। साथ दिया है। हाथ में हाथ होने से साथ-साथ चलते आ रहे हैं। बाबा के हाथ और साथ की कमाल है। हाथ भी दिया है फिर साथ भी दिया है। अलौकिक जन्म, दिव्य जन्म मिलते ही साथ का अनुभव बड़ा न्यारा बनाता है। बाबा न्यारा बनाता है। ड्रामा की हर सीन न्यारी है। हर आत्मा का पार्ट न्यारा है, बच्ची तुम न्यारी हो करके रहेंगी तो प्यारी बनेंगी। न्यारा रहने की अगर प्रैक्टिस कम है, बाबा के साथ का अनुभव कम है तो कभी भी हमारे अन्दर न अपने लिए प्यार है। न औरों के लिये सच्चा प्यार हो सकता है। कोई भी आत्मा सच्चे प्यार की भूखी है। अज्ञानी है, चाहे ज्ञानी है।

सच्चा प्यार बाबा से खींचना, अपने को उस प्यार से पालना देना, उसी अनुसार अपनी धारणाओं की शक्ति बढ़ाना। धारणाओं की शक्ति से सबको पालना देना - यह भी विशेषता चाहिए। जैसे मम्मा ने बड़े प्रेम से इशारों से पालना दी है। मम्मा समान हमारा चित्त भी बिल्कुल साफ रहे। मीठी मां ने हमको यह सिखाया है कि यह काम नहीं करना है। किसी का अवगुण देखा तो भी हरएक पुरूषार्थी है, मम्मा-बाबा भी जानते हैं। हमारे में अगर गुण हैं तो हमारे संग से उनका निकल जाएगा, कोई बड़ी बात नहीं। किसी का अवगुण देख करके अपने चित्त पर रखना फिर वर्णन करना, फिर कईयों के दिल को खराब करना- यह धन्धा बहुत खराब है।

बाबा हमारे सामने आइना है

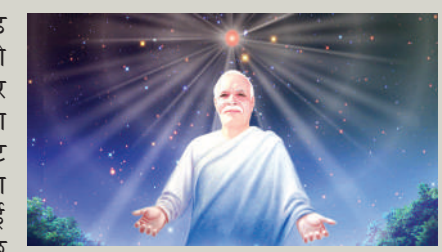

हमसे कई पूछते हैं कि आपका माइंड इतना स्टेबल माइंड कैसे बना है? तो मुझे पता है क्यों बना है, कैसे बना है। अगर थोड़ा भी किसी का अवगुण इधर-उधर का किचड़ा रखें और उस घड़ी कोई माइंड टेस्ट करें तो वह भूत आएगा जरूर जो भरा हुआ होगा वह फिर उसका छिपता नहीं है। कोई कितना भी कहें नहीं-नहीं मेरे अंदर तो कुछ भी नहीं है, मैं बिल्कुल साफ हूं, मेरी स्थिति अच्छी है, उस समय सब स्पष्ट हो जाता है। अंदर की स्थिति खुद व खुद बताती है। वास्तव में हमारी स्थिति कैसी होनी चाहिए? बाबा हमारे सामने आइना है, अपने आपको देखने के लिए ज्ञान है। अपने को न देख और किसी को देखते हैं।

एडिक्शन फ्री अभियान] 'माई राजस्थान एडिक्शन फ्री राजस्थान अभियान' का समापन

यहां ज्ञान-ध्यान से छुड़ाया जाता है नशा

1000+
गांवों को किया कवर

260+
कार्यक्रम आयोजित

1 लाख
लोगों तक पहुंचा संदेश

35535
लोगों ने लिया नशामुक्ति का संकल्प

आबू रोड से जोधपुर तक चलाया गया अभियान

20 जनवरी को आबू रोड से शुरुआत

02 अक्टूबर को जोधपुर में समापन

04 जिलों से होकर गुजरा अभियान

16 तहसीलों को किया कवर

» शिव आमंत्रण, आबू रोड/जोधपुर/राजस्थान। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सहयोगी संस्था राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के मेडिकल विंग और भारत सरकार द्वारा संयुक्त रूप से एक वर्षीय 'माई राजस्थान एडिक्शन फ्री राजस्थान अभियान' चलाया गया। अभियान का शुभारंभ 21 जनवरी 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्चुअल हरी झंडी दिखाकर ब्रह्माकुमारीज के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन आबू रोड से किया। अभियान राजस्थान के चार जिलों की 16 तहसीलों से होते हुए गुजरा। इस दौरान एक हजार गांव कवर करते हुए 260 कार्यक्रम आयोजित किए गए। रास्ते में आने वाले स्कूल, कॉलेज, मेडिकल व नर्सिंग कॉलेज में 30535 विद्यार्थियों, ग्रामीणों, किसानों ने नशामुक्ति का संकल्प लिया। मेडिकल विंग के कार्यकारी सचिव डॉ. बीके बनारसीलाल शाह ने बताया कि पूरे अभियान के दौरान एक लाख लोगों तक नशा मुक्ति का संदेश पहुंचा। इनमें बड़ी संख्या में स्कूली विद्यार्थी भी शामिल हैं। जिन्हें नशे के दुष्परिणाम बताते हुए आगे जीवन में इससे बुराई से दूर रहने की प्रतिज्ञा कराई गई। इन कार्यक्रमों में लोगों को सकारात्मक जीवनशैली का महत्व, आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का संदेश दिया गया। नशा आज सामाजिक बुराई बन गया है। शोध में सामने आया है कि अपराध का प्रमुख कारण नशा है। नशे से जहां शारीरिक रूप से हानि होती है, वहीं मानसिक और आर्थिक छति भी पहुंचती है। ब्रह्माकुमारीज के आध्यात्मिक अनुसंधान प्रभाग ने शोध कर यह निष्कर्ष निकाला है कि नशे का सबसे ज्यादा प्रभाव हमारे विचारों पर पड़ता है। गुटका, पान-तंबाकू, शराब के सेवन से हमारी माइंड में ऐसे हार्मोंस का स्त्रावण होता है जिससे माइंड की क्षमता कम होने के साथ विचार शक्ति कमजोर होती है। मन में नकारात्मक विचारों का जन्म होता है।

7 लाख लोगों को स्वास्थ्य कैंप में किया प्रशिक्षित

12 लाख लोग अब तक हुए नशामुक्त

300 नेशनल मेडिकल कॉन्फ्रेंस और सेमीनार

12 लाख ग्रामीणों को दी स्वास्थ्य शिक्षा

80 लाख + को दिया नशामुक्ति का संदेश

एक साल में राजस्थान में 72 हजार लोगों की हो जाती है तंबाकू से मौत-

एक सर्वे के मुताबिक अकेले राजस्थान में तंबाकू उत्पादों के सेवन के कारण हर साल करीब 72 हजार लोगों की मौत हो जाती है। जबकि भारत में करीब आठ लाख लोग प्रतिवर्ष अपनी जान गंवा देते हैं। प्रत्येक 10 मौत में से एक मौत तंबाकू के कारण हो रही है। इससे हमारी आयु 10 वर्ष तक कम हो जाती है। आज 35 फीसदी युवा नशे के चपेट में हैं। इस गंभीर समस्या को देखते हुए राजस्थान सरकार के स्वास्थ्य विभाग और ब्रह्माकुमारी मेडिकल विंग ने संयुक्त रूप से तंबाकू मुक्त राजस्थान का बीड़ा उठाया है। इसके तहत ग्राम से लेकर जिला स्तर तक लोगों को व्यक्तिगत स्तर पर काउंसलिंग कर तंबाकू छोड़ने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। साथ ही भविष्य में उपयोग नहीं करने का संकल्प दिलाया जाएगा।

झांकी और नुक्कड़ नाटक से भी दिया संदेश-

अभियान के दौरान रास्तेभर में जगह-जगह नशा मुक्ति जागरूकता का संदेश देने के लिए सुंदर झांकी सजाई साथ ही नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों को नशामुक्ति का संदेश दिया गया। नुक्कड़ नाटक में एक गांव की कहानी के माध्यम से नशे की बुराइयों और इसे छोड़ने की प्रक्रिया को समझाया गया। साथ ही नशे से होने वाली बीमारियों को बारे में भी गहराई से चिंतन किया गया।

विकृति सोच का परिणाम है नशा

नशा और कुछ नहीं हमारी नकारात्मक सोच का ही परिणाम है। नशे की शुरुआत हमारे गलत विचारों, नकारात्मक विचारों, विकृत सोच से ही शुरु होती है। किसी भी तरह का नशा करने के बाद कुछ समय के लिए हमारे माइंड में जो संदेशवाहक कोशिकाएं हैं वह शांत हो जाती हैं, अपना संदेश देना माइंड को बंद कर देती हैं और हमें लगता है कि नशे से हमें आनंद आ रहा है। जबकि हकीकत ये है कि इससे हमारी माइंड की पावर ही कम होती है।

– डॉक्टर सुशीला चौधरी, शिशु रोग विशेषज्ञ, जोधपुर

राजयोग मन के लिए एक औषधि की तरह है-

मन के विकारों से जुड़ी तमाम समस्याओं के लिए राजयोग मेडिटेशन एक औषधि की तरह है। समस्याएं और कुछ नहीं हमारे कमजोर मन की रचना हैं। एक ही परिस्थिति में दो लोगों में से एक शांत रहकर समाधान ढूंढने की कोशिश करता है तो दूसरा बैचेन हो जाता है। अशांत हो जाता है और परेशान हो जाता है। राजयोग हमारा रिश्ता खुद के साथ कराता है। हमें आत्म चिंतन और परमात्म चिंतन की ओर ले जाता है। संस्था से राजयोग मेडिटेशन सीखकर आज लाखों परिवार में सुख-शांति आई है।

– राजयोगिनी फूल दीदी, सेवाकेंद्र संचालिका, जोधपुर

समापन कार्यक्रम में इन्होंने भी रखे अपने विचार

- अभियान का समापन समारोह जोधपुर के सिंधु महल में आयोजित किया गया। इसमें नारकोटिक्स विभाग के निदेशक एसडी जांबोटकर ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान समाज में व्यसनमुक्ति जनजागृति का अभियान चला रही है जो समय की जरूरत है। व्यसन न केवल व्यक्ति को बल्कि पूरे समाज को आर्थिक, शारीरिक रूप से पतन की ओर ले जाता है। ऐसे नेक कार्यों में हम सभी के लिए आगे आना होगा।
- यातायात पुलिस के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एडीजीपी चैन सिंह ने कहा कि ओम शांति वाले राजयोग मेडिटेशन से दुनिया में शांति स्थापित करने का बहुत श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं। समाज में आज ऐसे कार्यों की जरूरत है। ये बहनें देश के साथ विदेश में भी हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रचार-प्रसार करने का कार्य कर रही हैं।
- मथुरादास माथुर अस्पताल के अधीक्षक डॉ. विकास राजपुरोहित ने इस अभियान को एक आंदोलन के रूप में बताया। उन्होंने कहा कि हमें हमारे अंदर विद्यमान सभी रावण के रूपों से मुक्ति पानी ही है। मेडिटेशन से हमारे मन के विकारों रूपी रावण से मुक्ति मिलती है। आध्यात्म का ज्ञान हमें खुद से जोड़ता है।
- महात्मा गांधी अस्पताल के सहायक आचार्य स्पाइन सर्जन डॉक्टर महेंद्र सिंह ने कहा कि हर मरीज के इलाज में कहीं ना कहीं ईश्वरीय शक्तियों का ही योगदान होता है।
- न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उप निदेशक अनिल व्यास ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज द्वारा समाज में उत्कृष्ट कार्य किए जा रहे हैं। लोगों को नेक राह पर चलने का संदेश दिया जा रहा है। ऐसे अभियानों से लोगों को नशे से दूर रहने की प्रेरणा मिलती है। डब्बू से पधारे डॉक्टर बनारसी लाल चौहान ने रैली एवं अभियान से संबंधित सभी जानकारियों से अवगत कराया।

संपादकीय

कहीं खुद का इतना बड़ा नुकसान तो नहीं कर रहे

[हमेंशा सकारात्मक विचारों को मन में दोहरायें]

कई बार ऐसा होता है कि हमारी कोई भी वस्तु टूट जाये, कोई बड़ा नुकसान हो जाये या किसी को दिया हुआ धन वापस ना मिले तो बहुत बुरा लगता है। परन्तु कई बार ऐसा होता है कि हम अपना खुद ही बड़ा नुकसान कर रहे होते हैं और उसका पता नहीं पड़ता। जबकि उसका असर दैनिक जीवन में आसानी से देखा जा सकता है। जैसे कि यदि हम किसी के बारे में हम प्रतिदिन पांच मिनट भी व्यर्थ या नकारात्मक सोचते हैं तो उससे हम खुद को कमजोर कर रहे होते हैं। इसका असर हमारी सोच और कार्य व्यवहार पर पड़ता है। क्योंकि हम खुद को मजबूत करने का दूसरा कोई उपाय नहीं करते बल्कि दिन प्रतिदिन कमजोर होते जाते हैं। इसलिए हमें अपनी इन आदतों पर गहराई से ध्यान देना चाहिए। कम से कम ये तो मालूम पड़े कि कहीं हम इस तरह की चीजों में अपना बड़ा नुकसान तो नहीं कर रहे हैं। यदि कर रहे है तो इससे सावधान होने की जरूरत है। ताकि अपने जीवन को विकास के मार्ग पर अग्रसर कर सकें। नकारात्मक विचारों को बार-बार दोहराने से विचारों में काफी तीव्रता आ जाती है जिससे मन कमजोर हो जाता है और वह नकारात्मक विचार भी सिद्ध होने लगता है। लेकिन एक नकारात्मक विचार से एक सकारात्मक विचार कई गुणा पावरफूल होते हैं, अगर हम इसे बार-बार दोहराते हैं तो जीवन में चमत्वकारिक परिवर्तन होते हैं।

बोध कथा/जीवन की सीख

चिड़िया का घोंसला

सर्दियां आने को थीं और चिंकी चिड़िया का घोंसला पुराना हो चुका था। उसने सोचा चलो एक नया घोंसला बनाते हैं ताकि ठंड में कोई दिक्कत न हो। अगली सुबह वो उठी और पास के एक खेत से चुन-चुन कर तिनके लाने लगी। सुबह से शाम तक वो इसी काम में लगी और अंततः एक शानदार घोंसला तैयार कर लिया। पुराने घोंसले से अत्यधिक लगाव होने के कारण उसने सोचा चलो आज एक आखिरी रात उसी में सो लेते हैं और कल से नए घोंसले में अपना आशियाना बनागे। रात में चिंकी चिड़िया वहीं सो गई। अगली सुबह उठते ही वो अपने नए घोंसले की तरफ उड़ी, पर जैसे ही वो वहां पहुंची उसकी आंखें फटी की फटी रही गई। किसी और चिड़िया ने उसका घोंसला तहस-नहस कर दिया था। चिंकी की आंखें भर आईं वो मायूस हो गई। आखिर उसने बड़े मेहनत और लगन से अपना घोंसला बनाया था और किसी ने रातों-रात उसे तबाह कर दिया था।

अगले ही पल कुछ अजीब हुआ, उसने गहरी सांस ली, हल्का सा मुस्कुराई और एक बार फिर उस खेत से जाकर तिनके चुनने लगी। उस दिन की तरह आज भी उसने सुबह से शाम तक मेहनत की और एक बार फिर एक नया और बेहतर घोंसला तैयार कर लिया। जब हमारी मेहनत पर पानी फिर जाता है तो हम क्या करते हैं - शिकायत करते हैं, दुनिया से इसका रोना रोते हैं, लोगों को कोसते हैं और अपनी फ्रस्टेशन निकालने के लिए न जाने क्या-क्या करते हैं।
पर हम एक चीज नहीं करते-हम फौरन उस बिगड़े हुए काम को दोबारा सही करने का प्रयास नहीं करते। चिंकी चिड़िया की ये छोटी सी कहानी हमें यही सीख देती है कि घोंसला उजड़ जाने के बाद वो चाहती तो अपनी सारी उर्जा औरों से लड़ने, शिकायत करने और बदला लेने का सोचने में लगा देती। पर उसने ऐसा नहीं किया, बल्कि उसी ऊर्जा से फिर से एक नया घोंसला तैयार कर लिया।

संदेशः जब हमारे साथ कुछ बहुत बुरा हो तो हम न्याय पाने का प्रयास जरूर करें। पर साथ ही ध्यान रखें कि कहीं हम अपनी सारी ऊर्जा फ्रस्टेशन, गुस्से और शिकायत में ही न गंवा दें। ऐसा करना हमें हमारे ओरीजनल लॉस से कहीं ज्यादा नुकसान पहुंचा सकता है। मैं तो ये भी कहूंगा कि अगर कोई बहुत बड़ी बात न हुई हो तो उसे अनदेखा करते हुए अपने काम में पुनः लग जाएं। क्योंकि बड़े काम करने के लिए ये जिंदगी छोटी है। इसे बेकार की चीजों में नहीं गंवाया जाना चाहिए।

मेरी कलम से...

दशरथ मिश्रा
अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश, समस्तीपुर, बिहार

समाज को आत्मनिर्भर सशक्त एवं समृद्ध बनाने का मार्ग प्रशस्त कर रही ब्रह्माकुमारीज़ः न्यायाधीश मिश्रा

- देश की स्वतंत्रता अखंडता के लिए देश के कई परिवार ने अपना जान-बलिदान दिया...

शिव आमंत्रण, आबू रोड। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय माउंट आबू राजस्थान तथा भारत सरकार की ओर से जो देश दुनियां और समाज को सकारात्मक तरीके से जो बदलने का प्रयास किया जा रहा है वह बहुत ही सराहनीय है। ब्रह्माकुमारीज अपने अनोखे परमात्म ज्ञान और कार्यक्रम से जनता समाज को उन्नत एवं जागरूक करने का अनूठा प्रयास कर रही है। ब्रह्माकुमारीज आध्यात्मिक संस्था के रूप में सभी जाति धर्म के लोगों का आत्मिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास

निरंतर करती चली आ रही है और उसी कड़ी में कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम संस्था की ओर से प्रत्यक्ष एवं तकनीकी माध्यम से आयोजित किया जाता रहा है। इससे प्रगतिशील भारत की ओर से संवैधानिक, लोकतांत्रिक एवं सामाजिक समरसता के संकल्पों को साकार करने एवं भारत को आत्मनिर्भर सशक्त एवं समृद्ध बनाने का मार्ग प्रशिक्षित किया जा रहा है, जिससे मनुष्य के अंदर आत्मविश्वास पैदा कर उनमें सम्पूर्ण विकास की संभावनाएं विकसित हो सके। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के द्वारा आयोजित हर तरह के कार्यक्रम में मुझे भी आने का सौभाग्य मिलता ही रहता है। मैं चाहता हूं कि अधिक से अधिक संख्या में लोग इस संस्थान से जुड़कर इसका लाभ उठावें जिससे वे आत्मिक एवं सर्वांगीण विकास कर सकें। मैं इस संस्थान की सफलता के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता हूं एवं इस संस्थान को सुचारु रुप से संपादित करने और कराने के लिए इससे जुड़े सभी भाई बहनों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामना है।

आध्यात्मिक जगत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का यथार्थ

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 52

डॉ. अजय शुक्ला
बिहेवियर साइंटिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

मनुष्य जीवन को ऊंचा उठाने एवं आगे बढ़ाने के लिए सर्वप्रथम अंतर्मन को पवित्र बनाने की आवश्यकता होती है जिसके लिए व्यक्तिगत पुरुषार्थ - मंसा, वाचाएवंकर्मणा की पवित्रता से युक्त कर्म करने पर महत्वपूर्ण रूप से ध्यान रखना पड़ता है। आत्मा की समृद्धशाली उच्चता को समझने के साथ स्वीकार करने हेतु जिस विशिष्ट आयाम को अपनाना अनिवार्य है उसमें ज्ञान की गहराई को बोध के साथ आचरण में उतारना जीवन का व्यावहारिक पहलू होता है।

साधन और साध्य की पवित्रता

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में वृहद् स्तर पर प्रकृत्ति के पंच तत्व - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश की सृष्टिनैसर्गिक रूप से विद्यमान है। अध्यात्मिक जगत द्वारा प्रकृति के तत्वों को देव स्वरुप की संज्ञा प्रदान करके मानवीय चेतना को कल्याणकारी स्थिति से प्रेरणा ग्रहण करने की अवस्था तक गतिशील किया गया है। जीवन के सात्विक पक्ष को निभाने की शक्ति जहां अध्यात्म का मुख्य स्रोत है वहीं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिणाम अनुसन्धान की अनिवार्यता में मददगार बनना है। अध्यात्म जब पूर्ण रूप से विश्व के मनुष्यों का धर्म हो जाता है तब पुरुषार्थ में पवित्रता द्वारा प्रकृति को सतोप्रधान बनाने की जिम्मेदारी और जवाबदेही से व्यक्ति

स्वतः अभिप्रेरित होता है। विज्ञान के चमत्कार ने विभिन्न अविष्कार से मानव जाति को सूक्ष्म एवं स्थूल संसाधनों द्वारा भरपूर कर आत्मिक गुणों के विकास हेतु विशेष समय की शक्ति का वरदान दे दिया है ।

आध्यात्म का अनुकरण एवं अनुशरण

अभिप्रेरणा का प्रकाश पुंज आत्म विकास की प्रक्रिया में संलग्न रहकर व्यक्तिवाद - वस्तुवाद, पूंजीवाद, साम्राज्यवाद तथा भौतिकवाद, विस्तारवाद से मुक्ति हेतु भगीरथ प्रयास, अंततः आत्मा को सुख, शांति और आनंद की प्राप्ति कराता है। आध्यात्म के अनुकरण एवं अनुसरण से आत्मा की वैभव पूर्णतः उत्तम क्षमा से कल्याण का व्यवहार-दर्शन, अनहद नाद का अनुभव करते हुए भाव - भासना के साथ भावना-भाषा की पवित्रता को अक्षुण्य बनाए रखता है। सदप्रेरणा का यथार्थ आत्मा की समृद्धशाली और मंगलकारी परिणिति में उच्च दर्शन से निराकार तत्व को श्रेष्ठ - शुभ एवं पवित्र कर्म की स्थिति द्वारा पुण्य महान तथा धर्मगत अवस्था से देवात्मा के स्वरुप में परिवर्तित कर देता है। मानव जीवन के प्रांगण में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गतिशील समग्र चेतनता को उन्नति के पथ पर-परिवर्तन, परिणाम, परिमार्जन, परिवर्धन एवं परिष्कार के सन्दर्भ एवं प्रसंग में उत्कृष्टता हेतु सतत रूप से अभिप्रेरित किया जाता है। अध्यात्म के अंतर्गत-आत्मा के स्वमान, स्वरुप और स्वभाव का रूपांतरण, अनुभूति, दृष्टि, विकास और सम्पूर्णता की उच्चता को सदा स्थायी रखने का पुरुषार्थ मानवता की गरिमा को सदा समादर भाव से स्वीकार करता है।

कार्यक्षेत्र में योग का सानिध्य

मनुष्य जीवन को ऊंचा उठाने एवं आगे बढ़ाने के लिए सर्वप्रथम अंतर्मन को पवित्र बनाने की आवश्यकता होती है जिसके लिए व्यक्तिगत पुरुषार्थ- मंसा, वाचा एवं कर्मणा की पवित्रता से युक्त कर्म करने पर महत्वपूर्ण रूप से ध्यान रखना पड़ता है। आत्मा की समृद्धशाली उच्चता को समझने के साथ स्वीकार करने हेतु जिस विशिष्ट आयाम को अपनाना अनिवार्य है उसमें ज्ञान की गहराई को बोध के साथ आचरण में उतारना जीवन का व्यावहारिक पहलू होता है। व्यक्ति स्वयं को जब ज्ञान से परिपक्व करने हेतु पुरुषार्थ करता है तब वह योग का प्रयोग इस विधि से करने लगे कि प्रत्येक कार्यक्षेत्र में योग का सानिध्य जुड़ जाए तथा उसके द्वारा कर्मयोग की धारणात्मक पुष्टि सुनिश्चित हो सके।

"यदि आप धनवान हैं तो विनम्र बनें, फल लगने पर पौधे झुक जाते हैं।"
-संत साईं बाबा

"याद रखना अंधेरी रात में आपको दीया जलाने से कोई रोक नहीं सकता।"
-कवि हरिवंश राय बच्चन

नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित] आर्मी, नेवी, एयरफोर्स के अधिकारियों सहित 500 जवानों ने लिया भाग

कारगिल में परमात्मा की याद से विजय पाई: ब्रिगेडियर

सुरक्षा सेवा प्रभाग की पांच दिवसीय नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित, नौसेना के उपप्रमुख भी हुए शामिल

तीनों सेनाओं के वरिष्ठ अधिकारियों ने कॉन्फ्रेंस में लिया भाग।

मेडिटेशन रिट्रीट में मौजूद तीनों सेनाओं के अधिकारी व जवान।

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मनमोहिनीवन परिसर में पांच दिवसीय सुरक्षा सेवा प्रभाग की नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। इसमें देशभर से 500 तीनों सेनाओं के अधिकारी-जवान सहित पुलिस अधिकारियों ने भाग लिया। सभी ने खासकर मेडिटेशन सेशन में विशेष रुचि ली। समापन में श्री सनातन जेवा के कोस्ट गार्ड डीआईजी पारादीप ने कहा कि यहां सिखाए जा रहे राजयोगा मेडिटेशन सबसे उत्तम है। हम इसे अपने जीवन में अपनाएंगे। हर क्षेत्र में राजयोग मेडिटेशन की जरूरत महसूस हो रही है। ब्रह्माकुमारीज की पहल अनोखी, सराहनीय है। नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के पूर्व निदेशक रामफल पंवार ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज की फिलॉसफी और टीचिंग लॉजिकल है। फैक्ट के साथ यहां ज्ञान दिया जाता है। इससे लोगों को आंतरिक खुशी मिलती है और प्रसन्नता प्राप्त होती है। मैं भी राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करता हूं और इससे मेरे जीवन में काफी बदलाव आए हैं। मैं 2012 से ब्रह्माकुमारीज से जुड़ा हूं। राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास के बाद गुस्सा शांत हो गया। मेरे स्टाफ को हैंडिल करने में भी मदद मिली। मेरे सोच के स्तर में भी काफी बदलाव आया है।

लेफ्टिनेंट कर्नल विकास चौहान ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास के बाद मेरा सोचने का नजरिया बदल गया। पहले की अपेक्षा क्रोध कम हुआ है और ज्यादा खुश रहता हूं। सुरक्षा सेवा प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा बीके शुक्ला दीदी ने कहा कि आप सभी ने यहां जो भी आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन से जुड़ीं गहराई पूर्ण बातें सीखीं हैं उन्हें अपने-अपने सेवा स्थान पर जाकर प्रैक्टिकल जीवन में अप्लाई करें। इससे आपका जीवन तो सुखमय बनेगा ही साथ ही परिवार में भी माहौल खुशनुमा बनेगा। कैप्टन शिव सिंह भाई ने बताया कि राजयोग मेडिटेशन एक टेक्निक है। इसके नियमित अभ्यास से निश्चित रूप से फायदा होता ही है। ग्रुप कैप्टन डीएस सचान, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके गीता दीदी, बीके कमला दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कर्नल वीसी सती ने मंच संचालन किया। स्वागत गीत मधुरवाणी ग्रुप के कलाकारों ने प्रस्तुत किया।

सेना जितनी सशक्त रहेगी हम उतनी शांति से रहेंगे

हमारे देश की तीनों सेनाएं जितनी सशक्त रहेंगी, हम उतनी ही शांति से रहेंगे। क्योंकि जब हम सशक्त रहेंगे तो कोई भी बाहर से आकर आक्रमण नहीं करेगा। सेना बाहरी व भौतिक शांति के लिए कार्य करती है और ब्रह्माकुमारीज संस्था आंतरिक शांति के लिए कार्य कर रही है। कैसे हमारा अंतर्मन शांत रहे। जितना हम अंदर से सशक्त रहेंगे तो अपना कार्य बेहतर तरीके से कर पाएंगे। जैसे इस संस्था में बहुत अनुशासन है, वैसे ही सेनाओं में भी अनुशासन पर जोर दिया जाता है। यहां बाहरी स्वच्छता के साथ मन की स्वच्छता पर विशेष कार्य किया जाता है। सेनाओं में टीम वर्क पर जोर दिया जाता है, वैसे ही यहां भी टीम वर्क पर ध्यान दिया जाता है। यहां जीवन जीने की कला सिखाई जाती है। अब मैं बिना अलार्म के सुबह 3.30 बजे उठ जाता हूं। सबसे पहले राजयोग ध्यान करता हूं। इसके बाद रोज आध्यात्मिक परमात्म महावाक्यों का श्रवण करता हूं। हम देखते हैं कि रोजाना की दिनचर्या में जब काम ज्यादा बढ़ जाता है तो हम सबसे पहले एक्सरसाइज और मेडिटेशन करना छोड़ देते हैं। मेरा मानना है कि जब हमारा काम बढ़ जाए तो हमें पहले से ज्यादा एक्सरसाइज और मेडिटेशन करना चाहिए। क्योंकि उस काम को हम और अच्छे से कर सकते हैं। राजयोग मेडिटेशन से प्रत्येक परिस्थिति में हमारा मन स्थिर रहता है। मेरी धर्मपत्नी बचपन से ही सुबह 4 बजे उठ जाती हैं। उनके प्रयासों का ही परिणाम है कि आज उन्होंने मेरे घर को स्वर्ग जैसा बना दिया है।

– वाइस एडमिरल एसएम घोरमडे,
नौसेना के उपप्रमुख, अति परमवीर सेवा मेडल से सम्मानित

कारगिल युद्ध में परमात्मा की मदद महसूस की

जबसे मैंने ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान लिया है तब से परमात्मा का बहुत आशीर्वाद मेरे साथ है। मेरे इनर सेल्फ को साफ दिखता है कि हमने जो भी प्राप्त किया अब तक उसमें हमारा एक परसेंट भी रोल नहीं है। जब भी मेरे सामने कठिन परिस्थिति आई कारगिल युद्ध के दौरान तब मैं हर वक्त परमात्मा की याद में रहता था। परमात्मा की याद से युद्ध में विजय पाई। याद माना यहां जो हमें मेडिटेशन सिखाया गया कि हम सब आत्मा हैं और उस सुप्रीम सॉल की संतान हैं। जब आप इसे रोजाना प्रैक्टिस करते हैं तो हमें कई अनुभव होते हैं। अनुभव होने से तब पता चलेगा कि हम सब सिर्फ माध्यम हैं। जब हम हार्डवर्क, तनाव, मेहनत की बात करते हैं तब हम बॉडी कॉन्शियस में होते हैं। मेडिटेशन सॉल कॉन्शियस होना है।

– हरवीर सिंह, ब्रिगेडियर

यहां की फिलॉसफी सहज और सरल है

मेरा सबसे बड़ा प्रश्न यह था कि फोर्स के लोग अक्सर जीवन और मौत की परिस्थिति का सामना करते हैं। जिन्हें एक सेकंड से भी कम समय में निर्णय लेना होता है, जो लगातार स्ट्रेस में रहते हैं कि वह अपनी शिफ्ट पूरी करने के बाद जिंदा वापस जा पाएंगे कि नहीं। अगली बार वह अपने परिवार से मिल पाएंगे या नहीं? इसमें आध्यात्म कैसे मदद करेगा? लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान और ब्रिगेडियर हरवीर सिंह का कारगिल संस्मरण सुनने के बाद हमारी सारी शंकाओं का समाधान हो गया। ब्रह्माकुमारीज की फिलॉसफी बिना जटिलता के बहुत सहज और सरल है।

– हिमांशु मिश्रा, आईपीएस, पूर्व आईजी, हिमाचल प्रदेश

राजयोग मेडिटेशन की प्रैक्टिस करता हूं

सीआरपीएफ और ब्रह्माकुमारीज का 1975 से जुड़ाव रहा है। पांडव भवन में जाकर बहुत खुशी होती और मन शक्तिशाली हो जाता। माउंट आबू में मैंने सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया है। समय मिलने पर मेडिटेशन की प्रैक्टिस करता हूं।

– सुनील जू, आईजी, आंतरिक सुरक्षा अकादमी (आईएसए), माउंट आबू।

किसानों को जैविक-यौगिक खेती के लिए जागरूक कर रही है ब्रह्माकुमारीज़: ग्रामीण विकास मंत्री सिंह

ब्रह्माकुमारीज का कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग किसानों में जागरुकता ला रहा है। प्रभाग से जुड़कर आज देश में हजारों किसान राजयोग का उपयोग करते हुए यौगिक खेती कर रहे हैं। मैं किसान का बेटा हूं। मैंने खुद खेती करवाई और की है। आज रासायनिक खादों के अत्यधिक प्रयोग से कहीं न कहीं हमारे अनाज की जो खुशबू, पौष्टिकता थी वह गायब हो गई है। तीन दशकों में हमने खेतों में पेस्टीसाइड डालकर जहर का उत्पादन शुरू किया है। हरिणाया में स्थिति ये है कि कई गांवों में हर तीसरे व्यक्ति को कैंसर है। किसान बागवानी की ओर बढ़े इसके लिए हरियाणा सरकार किसानों को प्रेरित कर रही है। जैविक खेती और नशामुक्ति के लिए ब्रह्माकुमारीज की बहनें लोगों को जागरूक कर रही हैं। आपके इस प्रयास को हर गांव तक ले जाने का प्रयास करुंगा।

– देवेंद्र सिंह 'बबली', ग्रामीण विकास मंत्री, जिंद, हरियाणा सरकार

किसान खुद तैयार कर रहे जैविक खाद

ब्रह्माकुमारीज ने विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को जीने की नई राह दिखाई है। भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। हम किसानों के योगदान को भूल नहीं सकते हैं। किसानों को शाश्वत यौगिक खेती के बारे में जागरूक करने बहुत ही सराहनीय कार्य कर रही हैं। भारत जीवनशैली प्राचीन काल से आकर्षण का केंद्र रही है। राजयोग को खेती में शामिल करने से किसान उन्नति कर सकते हैं। यहां से जुड़कर कई किसानों ने खुद जैविक खाद तैयार किया है और आज सफलतम रूप से यौगिक खेती कर रहे हैं।

– सतेज डी पाटिल, पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री, महाराष्ट्र सरकार

ग्रामीण महिलाएं समृद्धि के दीप जलाएं विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि हमारा वह महान देश है जहां माता सीता हुईं, गार्गी हुईं, जानकी हुईं। वर्तमान परिवेश पर नजर डालें तो पुरुषों के साथ महिलाओं को भी अपने आचरण में सुधार की जरूरत है। हमारे देश में पन्ना धाई जैसे मां भी हुईं हैं। ब्रह्माकुमारीज में इन बहनों ने आध्यात्म के संदेश को गांव-गांव तक पहुंचा दिया यह इनकी शक्ति और साहस का ही कमाल है।

– बच्चन सिंह आर्य, पूर्व कृषि मंत्री, पानीपत, हरियाणा

गेहूं और चावल के उत्पादन में आज हम विश्व में दूसरे नंबर पर हैं। साथ ही इन दोनों अनाज का निर्यात भी कर रहे हैं। जल्द ही हम इनमें प्रथम स्थान पर प्राप्त करेंगे। नई पद्धति बायोगैस प्लांट को किसान अपने खेत में लगाकर डबल लाभ प्राप्त कर सकते हैं। किसान खेत के साथ पशुपालन जरूर करें। जब किसान आत्मनिर्भर बनेंगे तो समाज और देश आत्मनिर्भर बनेगा। साथ ही अपनी कुल जमीन में से कुछ हिस्से में यौगिक खेती जरूर करें।

– डॉ. आरएम चौहान, एसडीएयू, कुलपति, सरदार कृषि नगर दांतीवाड़ा।

यौगिक खेती की शुरुआत आप गृह वाटिका के रूप में भी कर सकते हैं। जैसे यदि शरीर स्वस्थ है, रोग प्रतिरोधक क्षमता सही है तो बीमारियां कम आती हैं। इसी तरह यदि पौधों की रोग प्रतिरोधकता क्षमता ठीक है तो उसे बीमारियां कम लगती हैं और उत्पादन अधिक होता है। मैं दस साल से राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रहा हूं। इन दस साल में कई परिस्थितियां आईं लेकिन मैं कभी निराश नहीं हुआ। आज हमारी कंपनी द्वारा देशभर में यौगिक खेती के लिए बीज उपलब्ध कराए जाते हैं।

– विनोद लाहोटी, जियो लाइफ, सीएमडी, मुंबई

किसानों को ही निकालना होगा समाधान

जब समाधान किसान की ओर से निकाला जाएगा तभी वह समाधान स्थाई होगा। इसके लिए किसानों को ब्रह्माकुमारीज जैसे संस्थाओं से प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लेकर और जल संरक्षण को लेकर कार्य करना होगा। भोपाल जोन की निदेशिका बीके अवधेश ने कहा कि आत्मनिर्भर किसान हमारी भारतीय परंपरा है। जो प्रकृति के समीप रहता है तो वह प्रकृति जीत रहता है और मनजीत बनते हैं। जिसने प्रकृति को जीत लिया और मन जीत लिया तो वह जगतजीत बन जाता है। इसलिए किसान जगतजीत होते हैं।

– बीके सुमन्त, मुख्यालय संयोजक, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग, माउंट आबू

सम्मेलन] राष्ट्रीय यौगिक कृषि-वैश्विक कृषि का प्रकाश स्तंभ महास

प्राकृतिक व यौगिक
बदलेगी किसानों की

देशभर से पांच हजार किसानों, कृषि अधिकारियों

कृषि महासम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, वरिष्ठ बीके सदस्य

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन मुख्यालय में पांच दिवसीय राष्ट्रीय यौगिक कृषि-वैश्विक कृषि का प्रकाश स्तंभ म आए कृषि विशेषज्ञ, मेडिटेशन एक्सपर्ट और प्रगतिशील किसानों ने मंथन-चिंतन कर निष्कर्ष निकाला कि प्राकृतिक-यौगिक खेती से ही कि कि किसानों को फिर से अपनी प्राकृतिक, जैविक, यौगिक खेती की ओर लौटना होगा। संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमो यहां से जैविक खेती की शिक्षा लेकर जाएं और अपनी खेती में इसका प्रयोग जरूर करें। प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा बीके सरला दीदी ने कह कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकेंगे।

हजारों साल पहले किया गया यौगिक खेती का उल्लेख

लखनऊ से आए उप्र के कृषि निदेशालय के उपनिदेशक बद्री विशाल तिवारी ने कहा कि भारत एक समय सतयुगी, स्वर्णिम भारत था। प्रकृति संतुलित और सब सुखी थे। त्रेतायुग में भी प्रकृति हमारी सहयोगी और सुखदायी थी। द्वापरयुग में भी प्रकृति का साथ मिला। हम रामराज्य की कल्पना करते हैं, जहां सब सुखी रहते हैं। रामराज्य के लिए जरूरी है कि अन्न और मन दोनों शुद्ध और सात्विक हों। यौगिक खेती से अन्न और मन दोनों शुद्ध होते हैं। अपना संबंध परमपिता परमात्मा से जोड़कर उनसे शक्तिशाली किरणें लेकर फसल को शुभ बाइब्रेशन देना ही यौगिक खेती है। भौतिक और पराभौतिक ऊर्जा के समन्वय द्वारा प्राकृतिक विधि से की जाने वाली खेती ही शाश्वत यौगिक खेती है। इसके तहत हम प्रकृति को नष्ट नहीं करते हैं। जीवाणु की रक्षा करते हैं और उनसे प्रेमपूर्ण व्यवहार व्यवहार करते हैं। भौतिक ऊर्जा जो प्रकृति से मिलती है और पराभौतिक ऊर्जा को हम परमात्मा से योग के माध्यम से प्राप्त करते हैं। जैसे यदि सूर्य की किरणें समूची पृथ्वी पर पड़ रही हैं लेकिन यदि हमें लेंस की सहायता से कागज जलाना है तो उसे स्थिर करके एक ही केंद्र पर रखना होगा तो कागज सूर्य की किरणों से जलने लगता है। इसी प्रकार परमात्मा अपनी शक्तियां विखेर रहे हैं लेकिन उन्हें योग के माध्यम से हम संग्रहित, एकत्रित करते हैं। यौगिक खेती हजारों साल पुरानी प्रामाणित विधि है। इसे हजारों साल पहले हमारे ऋषि-मुनियों ने प्राकृतिक खेती का उल्लेख किया है। ऋग्वेद में कहा गया है कि हम धरती मां की पूजा, हल की पूजा, बैल की पूजा, रोपाई लगाते हुए गीत गाने की परंपरा थी। हर चीज का सम्मान था, जिसे आज हम भूल गए हैं।

म्मेलन आयोजित

खेती से तकदीर

ने लिया भाग

व अतिथिगण।

हासम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देशभर से
कसानों की तकदीर बदलेगी। अब समय आ गया है
हिनी ने कहा कि देशभर से आए सभी किसान भाई
ढ़ा कि सभी किसान भाई यौगिक खेती अपनाएंगे तो

पेड़-पौधे भी सुनते हैं हमारी बातें, हमारे नकारात्मक और सकारात्मक संकल्पों का पड़ता है प्रभाव

यौगिक खेती में कोल्हापुर के किसान बीके बालासो रुगे ने किए चमत्कारिक प्रयोग

सम्मेलन में अपना अनुभव बताते हुए यौगिक खेती में नए-नए प्रयोग करने वाले कोल्हापुर से आए किसान कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के एक्जीक्यूटिव मेंबर बीके बालासो रुगे ने बताया कि यौगिक खेती में बीज को मेडिटेशन रूप में परमात्मा से शक्ति लेकर उसे शांति, शक्ति और पवित्रता के शुभ बाइब्रेशन देकर चार्ज करते हैं। बीज को संकल्प देते हैं कि आपको धरती मां की गोद में शक्तिशाली, निरोगी पौधों का निर्माण करना है, इसे बीज संस्कार कहते हैं। बीज के अंदर एक ऊर्जा होती है, जिससे पौधा बनता है। पेड़-पौधे हमारी बातें सुनते हैं और उन पर भी हमारे मन के सकारात्मक और नकारात्मक संकल्पों का प्रभाव पड़ता है। यौगिक खेती में हम रोजाना ब्रह्मांड की शक्ति, कॉसमिक शक्ति, परमात्म शक्ति जिसे हम भगवान, अल्लाह और गॉड कहते हैं। इस शक्ति से पौधों को रोज ब्रह्ममुहूर्त में राजयोग मेडिटेशन से शुभ बाइब्रेशन देते हैं। ब्रह्माकुमारीज द्वारा विकसित की गई शाश्वत यौगिक खेती पद्धति में विज्ञान और आध्यात्म का समन्वयक किया गया है। यौगिक खेती के लिए देशी गाय को पालन बहुत जरूरी है। घर पर तैयार किया गया जैविक खाद का उपयोग करते हैं। यौगिक खेती का प्रशिक्षण ब्रह्माकुमारीज में निःशुल्क दिया जाता है। यौगिक खेती के दौरान हम पेड़-पौधों से बातें करते हैं।

वैज्ञानिक भी कर चुके हैं शोध

उन्होंने बताया कि 1905 में वैज्ञानिक सर जगदीश चंद्र बसु ने एक शोध किया है। जिसमें उन्होंने साबित किया था कि हमारे सकारात्मक और नकारात्मक विचारों का प्रभाव पेड़-पौधों पर पड़ता है। वह हमारी भावनाओं को समझते हैं। हमारी संरचना और पेड़-पौधों की संरचना में कोई अंतर नहीं है। आधुनिक विज्ञान में एक भी ऐसी मशीन नहीं है जो 1905 में वैज्ञानिक बसु के द्वारा बनाई गई ऑक्सी पल्स रिकार्डर मशीन जैसी कोई मशीन हो। दिल्ली के एक साइंटिस्ट थे एलएस माथुर। उन्होंने लंदन में पीएचडी की आइंस्टीन के थ्योरी ऑफ रिलेटीविटी के सिद्धांत पर उसमें उन्होंने लिखा है कि इस सारी सृष्टि को चलाने वाली एक ऊर्जा है, जिसे हम भगवान कहते हैं। ब्रह्मांड की शक्ति को प्राप्त करने का सबसे सही तरीका है भारत का प्राचीन राजयोग जो सिर्फ ब्रह्माकुमारीज में सिखाया जाता है। उत्तराखंड की यूनिवर्सिटी में दो विद्यार्थियों ने इस पर रिसर्च किया कि कैसे म्यूजिक और मेडिटेशन का असर पेड़-पौधों और पर्यावरण पर पड़ता है। इसमें जो डाटा निकला वह 2016 में विश्वस्तर पर निकलने वाला जर्नल में प्रकाशित हो चुका है। हमारे बुजुर्ग किसान सबसे बड़े वैज्ञानिक थे। वह खेत में फसल की बुवाई के पहले बीज की पूजा करते थे। उसका आभार मानते हुए धरती मां की गोद में अर्पित करते थे। फिर जो अनाज मिलता था उसे धरती मां की पूजा करते हुए घर लाते थे। उसमें से एक हिस्सा बाकायदा पशु-पक्षियों के लिए भी रखते थे। हमारा मानना है कि 33 करोड़ बीमारियों की ठीक करने की ताकत गोमूत्र में है।

इन्होंने भी व्यक्त किए अपने उद्गार

कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, नई दिल्ली से आए आईसीएआर के डिप्युटी डायरेक्टर डॉ. ए.के. सिंग, माधापुर से आए श्रीरामकृष्णा ट्रस्ट के मनोज सोलंकी, नेशनल को-ऑर्डिनेटर बीके सुनंदा दीदी, गोधरा से आई प्रभाग की जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके सुरेखा दीदी, हांसी से आई प्रभाग की एक्जीक्यूटिव मेंबर बीके लक्ष्मी दीदी, पानीपत से आए ज्ञानमान सरोवर के निदेशक बीके भारत भूषण, गोवा से आई प्रभाग की सक्रिय सदस्य बीके दर्शना दीदी, मोटिवेशनल स्पीकर बीके स्वामीनाथन, बेचराची की बीके शीतल, अक्कलकोट के प्रगतिशाल किसान बीके रघुनाथ ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन मलाड की बीके कुंती दीदी, सूरत से आई प्रभाग की नेशनल को-ऑर्डिनेटर बीके तृप्ति दीदी, बिलासपुर से आई बीके राखी दीदी और प्रो. डॉ. किरण रावल ने किया। आभार मुख्यालय संयोजक बीके शशिकांत और बीके सुमंत ने माना।

मैं सतयुग, दिव्य आत्मा हूं, परमात्मा की संतान हूं

स्वर्णिम दुनिया में हर एक आत्मा सुखी रहती है। अपने मन में संकल्प करें कि परमात्मा ने सतयुगी दुनिया बनाने के लिए मुझे चुना है। क्योंकि मैं सतयुगी आत्मा हूं। दिव्य आत्मा हूं। सबको देने वाली आत्मा हूं। सबको सुख देने वाली, प्यार देने वाली, सम्मान देने वाली सतयुगी आत्मा हूं। यहां से घर जाकर रोज इन बातों को दोहराएं। क्योंकि संकल्प से सृष्टि बनती है। जैसे हमारे संकल्प होते हैं वैसी ही हमारी सृष्टि बनने लगती है। हमें देवता बनना है। देवता सिर्फ देते हैं। देवता सबको प्यार, खुशी, आनंद, सम्मान, दुआ देते हैं। संस्कार से संसार बनता है। शुद्ध अन्न खाने से शुद्ध मन बनता है।

– **बीके शिवानी दीदी,** मोटिवेशनल स्पीकर

प्यार से बात की तो गुलाब की हुई अच्छी वृद्धि

एक बार वैज्ञानिकों ने शोध किया और दो गुलाब के पौधे लिए। इनमें एक पौधे को रोज प्यार से बातें की और अच्छा म्यूजिक सुनाया गया तो वह तेजी से बढ़ा। वहीं दूसरे पौधों से नकारात्मक बातें की और बॉलीवुड म्यूजिक सुनाया तो उसकी कम वृद्धि रही। मल्टीमीडिया चीफ बीके करुणा ने कहा कि प्रकृति मां को बचाने के लिए हम फिर से जागरूक हो रहे हैं। सारे विश्व में एकमात्र भारत देश है जो जैविक खेती, प्राकृतिक खेती और यौगिक खेती में तेजी से आगे बढ़ रहा है। भारत सरकार भी प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए योजनाएं चला रही है। शुद्ध अन्न से ही हम स्वर्णिम भारत की ओर बढ़ेंगे।

– **डॉ. सुरेन्द्र नाथ,** पूर्व उप कुलपति, ओयूटी विवि, भुवनेश्वर।

18 साल से प्रकृति पर काम कर रहा हूं

18 साल से प्रकृति पर काम कर रहा हूं। किसान के खेत में किसान काम न करे प्रकृति काम करे, इस पर काम कर रहा हूं। ये पूरी प्रकृति एनर्जी, अणु, जीवाणु से बनी है। इसका प्रकृति में 96 प्रतिशत है। अगर ये तीनों हों तो किसान का एक ही काम है फसल बोना और काटना। ईश्वर से हम सात रंग की किरणें लेकर अपनी फसल को दे सकते हैं। एनर्जी को पकड़ने का काम पंच महाभूत करते हैं। हम परमात्मा से एनर्जी लेकर पेड़-पौधों को दे सकते हैं। मैंने 20 ग्राम सरसों से 12 क्विंटल सरसों की पैदावार ली है। खेती में ऊर्जा जल डालने से सभी तत्व मिल जाते हैं।

– **ताराचंद बेलजी,** डायरेक्टर, सोल सोसायटी ऑफ आर्गेनिक फॉर्मिंग, जबलपुर

भूमि को बचाना है तो यौगिक खेती अपनाएं

मैं किसान भाइयों की मेहनत को देखकर उनके आगे सिर खुशी से नतमस्तक हो जाता है। किसान भाई ही हमें अन्न देते हैं। यदि भारत भूमि को बचाना है तो प्राकृतिक-यौगिक खेती की ओर लौटना होगा। इससे जहां हमें शुद्ध अन्न मिलेगा तो तन स्वस्थ रहेगा और शुद्ध अन्न से शुद्ध मन भी रहेगा। भारत के अन्न में जो स्वाद मिलता है वह बाहर के अन्न में नहीं मिलता है। अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन भाई ने कहा कि यौगिक खेती, श्रेष्ठ क्वालिटी की खेती है। इससे जहां हमारा मन संतुलित रहेगा वहीं तन भी स्वस्थ रहेगा।

– **राजयोगिनी बीके संतोष दीदी,** संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

यौगिक खेती ब्रह्माकुमारीज द्वारा विकसित की गई एक नई पद्धति है। इसे लेकर संस्थान नित नए-नए शोध कार्य कर रही है। इसका लाभ लेकर आज हजारों किसान सफलतापूर्वक खेती कर रहे हैं। प्रभाग का उद्देश्य है कि हर किसान संपन्न बने। नशामुक्त हों। जीवन सुखमय हो। हर ग्राम गोकुल ग्राम बने। लोगों के जीवन में सुख-शांति हो।

– **बीके सरला दीदी,** अध्यक्षा, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग, महेसाणा, गुजरात।

संस्थान के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा वर्ष 2007 में शाश्वत यौगिक खेती का प्रोजेक्ट शुरू किया गया था। इसमें योग के प्रयोग और विचारों द्वारा खेती करने के सफलतम प्रयोग किए गए। जिसमें पेड़ पौधे प्रभावित होकर रेपोन्ड भी करते हैं। जहां रसायनिक खाद की जरूरत होती है वहां हमलोगों ने जैविक खाद, गोबर, कंपोस्ट से बहुत ही अच्छा परिणाम प्राप्त कर रहे हैं। देश के सभी किसानों को यह विधि पता चलेगा तब हमारा देश विश्व गुरू बनेगा।

– **बीके राजू भाई,** उपाध्यक्ष, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग, आबू रोड।

बाहर नहीं हमें खुद को बदलने की जरूरत है

यदि सोच गलत है तो सारी चीजों में कमियां, अवगुण ही नजर आएंगे

सबसे पहले अपने मन मंदिर को संवारें, जीवन अपने आप संवर जाएगा

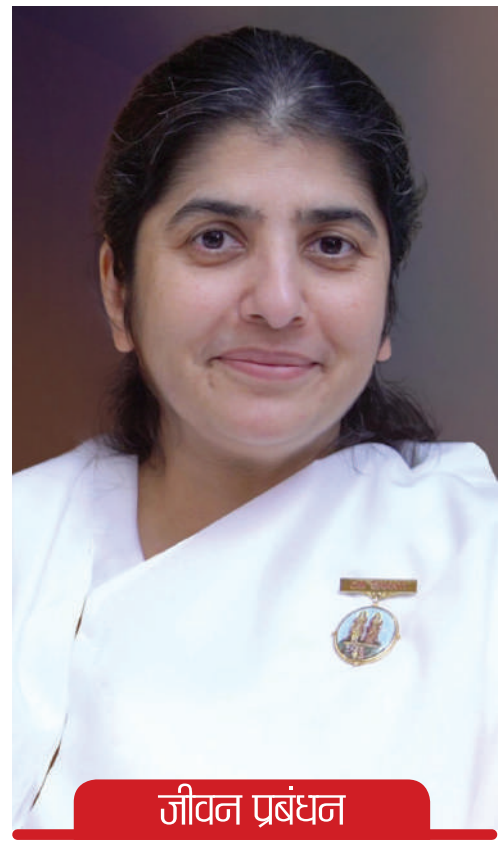

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन गुरुग्राम, हरियाणा

शिव आमंत्रण, आबू रोड। हमें अपने बच्चों को सबसे इम्पोर्टेंट चीज कौन सी देनी है। सिर्फ धन कमाकर देने से बच्चे और परिवार हमेशा सफल रहेंगे ये जरूरी नहीं है। हमें धन के साथ उनको क्या कमाकर देना है? इनर पावर मुझे सोच- सोच के लगता है कि आप कैसे इतना सुनते हैं या उसको पढ़ के कम्प्यूटर में टाइप करना और अलग से जो डिजाइनिंग का काम है वो तो है ही। मेरा सच में कभी-कभी दिमाग खराब हो जाता है लेकिन आप कैसे इतना कुछ करते हैं अलग से जो न्यूज आता है उसको देखना उसमें से क्या डालना है फिर अलग से इतना सेवा है अपना खुद का इतना काम है, आप कैसे करते हैं डेली। मुझे सोच-सोच के लगता हैं।

अगर आपके कमरे का वास्तु ठीक नहीं है ना चैलेंज लो उसके लिए। बोलो हम कमरे में डायरेक्शन नहीं ठीक करेंगे, जो है सो है बन गया, बार-बार तो तोड़ते नहीं रहेंगे। कोई आकर बोलता है ये तोड़ दो, कोई आकर बोलता है ये तोड़ दो। वो सही बोल रहे हैं लेकिन हम कितना तोड़ते रहेंगे बार बार। हम ये भी तो बोल सकते हैं न हां हम समझ रहे हैं आप जो बोल रहे हैं लेकिन हम ये भी करेंगे। हम इस कमरे में रह के लेकिन हम आपको गारंटी करते हैं कि हमारा झगड़ा नहीं होगा।

आज से एक सोच है सिर्फ, लेकिन जिसने ये सोचा मेरा कमरा गलत है, यहां झगड़ा होगा ही। मेरे दुकान का डायरेक्शन गलत है, यहां पर बिजनेस चलेगा नहीं तो खुद ही दुआएं देते रहते हैं। अपने काम को अपने घर को फिर वो नहीं चलता और जब नहीं चलता तो कहते हैं कि डायरेक्शन ही ठीक नहीं था, इसलिए नहीं चला। सोच को सही रखो। हर चीज़ बाहर नहीं बदलनी। बाहर बदलते-बदलते हैं आज आप अगर बड़ी शहरों में आओगे लोग घर बदलने के लिए तैयार हैं, दुकान बदलने के लिए तैयार हैं लेकिन सिर्फ खुद बदलने के लिए तैयार नहीं हैं। बाकी सबकुछ बदलने के लिए रेडी हैं बाहर। सब कुछ चेंज करने के बजाय सिर्फ एक को चेंज कर दो तो सब कुछ ठीक हो जाता है। आखिरी होमवर्क जो हमें करना है- मैं आत्मा कौन हूं, कैसे संस्कार हैं मेरे? अब ये हर एक को समझना बहुत जरूरी है क्योंकि ये समझ लिया तो खुद को भी समझना बहुत सहज हो जाएगा। दूसरों को भी समझना बहुत सहज हो जाएगा।

आत्मा में होते हैं पांच प्रकार के संस्कार

पहला पूर्व के संस्कार-

यह वो होते हैं जो मैं आत्म अपने पूर्व जन्मों से लेकर आती हूं। इसलिए आपके दो बच्चे अलग-अलग हैं, क्योंकि वो पूर्व जन्मों से बहुत सारे संस्कार लेकर आते हैं। जैसे एक कम्प्यूटर में या जैसे एक फोन पर पांच फोल्डर होते हैं ना, ऐसे ही मुझे आत्मा पर पांच प्रकार के संस्कारों के फोल्डर हैं। एक है पूर्वजन्म के संस्कार।

दूसरा गर्भ संस्कार-

माता-पिता से, परिवार से मिले संस्कार। हर एक के अंदर अपने परिवारों से मिले संस्कार हैं और ये संस्कार हमें कौन सी आयु से मिलनी शुरू हो जाते हैं? हमें ये गर्भ में मिलने शुरू हो जाते हैं इसलिए उसे कहा जाता हैं गर्भ संस्कार। क्योंकि गर्भ में माता-पिता की स्थिति, माता-पिता के बोल और व्यवहार उस बच्चे पर बहुत गहरा प्रभाव डालते हैं। बहुत ध्यान रखना चाहिए कि गर्भ में बच्चे के संस्कार बनते हैं।

तीसरा वातावरण के संस्कार-

तीसरे तरह के संस्कार हैं वातावरण के संस्कार। हम कौन से शहर में रहते हैं, किस स्कूल में पढ़ते हैं, हमारे दोस्त कौन हैं। आजकल तो संग भी हैं मीडिया।

हम सारा दिन टीवी- इंटरनेट से हम क्या सुनते हैं, पढ़ते और देखते हैं। ये हमारा संग है। इसका हमारे संस्कारों पर असर पड़ता है, इसलिए सत्संग। सत्संग अर्थात् सत्य का संग रखना। संग का ध्यान रखना। संगदोष में आकर आत्माएं अपना भाग्य बदल देती हैं और सत्य के संग में आकर आत्माएं अपना भाग्य बदल देती हैं।

चौथा दृढ़ता के संस्कार-

चौथे प्रकार के संस्कार हैं- जो मुझे आत्मा ने अपने शक्ति से बनाई है जिसको हम कहेंगे विल पावर। अब ये कैसे बनता है? अगर मेरे अंदर कोई भी संस्कार है जो चाहे वो पूर्व जन्म से आया, चाहे वो परिवार से मिला, चाहे वो वातावरण से बना वो मेरा संस्कार है। लेकिन मैं आत्मा आज निर्णय ले लूं तो आज मैं अपना संस्कार बदल सकती हूं। हम सबने अपने कितने सारे संस्कार बदले हैं, अपनी कितनी सारी आदतें बदली हैं, बस अपने विल पावर से। बस आज से नहीं करना है, आज से मुझे ये नहीं खाना हैं, आज से मुझे जल्दी उठना है आदि-आदि। एक दिन में, एक क्षण में हम बदल देते हैं। ये हैं मुझ आत्मा की विल पावर।

पांचवां निज संस्कार-

पांचवे प्रकार का संस्कार जो सबसे महत्वपूर्ण है और यही वो है जो हर आत्मा के पास एक जैसा है उसको हम कहते हैं आत्मा के निज संस्कार। उस पांचवी फोल्डर में सात संस्कार हैं। पहला संस्कार- पवित्रता। दूसरा संस्कार- शान्ति। तीसरा संस्कार-शक्ति। चौथा संस्कार- सुख। पांचवां संस्कार-प्रेम। छठा संस्कार- ज्ञान। सातवा संस्कार- आनंद। इसलिए कहा जाता है सतो गुणी आत्मा।

ब्रह्माकुमारी बनने की दिव्य ट्रेनिंग के अनुभव...

मैं ज्ञान में सात साल से हूं। पिछले दो साल से सेंटर पर रहकर सेवा कर रही हूं। यहां हमने जीवन में आगे बढ़ने के लिए बहुत कुछ सीखा। ट्रेनिंग में मैंने बहुत कुछ नई-नई चीजें सीखीं। टाइम मैनेजमेंट, डिसीप्लेन सीखा। पर्सनॉलिटी डवलपमेंट की बहुत बातें सीखीं जैसे- हमें कैसे भोजन करना है, कैसे बातचीत करनी है, कैसे हमारा रहन-सहन हो। वर्तमान समय में प्रकृति के माध्यम से बहुत समस्याएं आ रही हैं, यहां मैंने जाना कि कैसे हम मां प्रकृति को साकाश दे सकते हैं। मेरी लाइफ में बहुत प्रश्न थे जिसे मैं किसी के साथ शेयर नहीं कर सकती थी जिन सवालों के जवाब मुझे इस ट्रेनिंग में मिल गए। अलग-अलग संस्कृति, सभ्यता की बहनों के साथ रहने से भारतवर्ष की अलग-अलग परंपराओं, रीति-रिवाज को जानने का मौका मिला। इस दौरान बड़े प्रेम से हमने उनकी भावनाओं को भी समझा।

● बीके सिमरन (27) बीए, पातड़ा, पटियाला, पंजाब

मैं ज्ञान में एक साल से हूं। एक महीने की कुमारियों की ट्रेनिंग करने का मौका मिला। यहां मुझे जीवन में कई दिव्य गुणों को धारण करने की प्रेरणा मिली। यहां की व्यवस्थित दिनचर्या से मुझे जीवन में समय प्रबंधन और एंगर मैनेजमेंट का ज्ञान मिला। साथ ही दीदियों ने ब्रह्माकुमारीज के इतिहास के बारे में गहराई से बताया। साथ ही भाषण कला, बोलचाल की कला का ज्ञान मिला। कुमारी जीवन की श्रेष्ठ धारणाओं को गहराई से बताया और पवित्र जीवन का महत्व बताया गया। सात दिन का राजयोग मेडिटेशन कोर्स कराने की बहुत ही गहराई से ट्रेनिंग दी गई। पहले सेंटर पर मुरली तो रोज पढ़ते थे लेकिन यहां आकर मुझे मुरली पढ़ने का सही तरीका और उसे सारा दिन याद कैसे रखें यह टेक्निक सिखाई गई। पहली बार यहां फरिश्ता स्थिति के योगाभ्यास में फरिश्ता स्थिति का गहन अनुभव किया। खुद को सदा स्वस्थ कैसे रखें इसके लिए जरूरी सावधानियां भी बताईं गईं।

● बीके रुहानी (20) बीए, पातडा, पटियाला, पंजाब

मैं ज्ञान में चार साल से हूं। दो साल से सेंटर पर रहकर सेवाएं दे रही हूं। यहां आकर मैंने सीखा कि यदि हमारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, कोई बीमारी आती है तो भी हमें स्थूल सेवा करनी चाहिए। क्योंकि जब हम स्थूल सेवा करते हैं तो इससे हमारे पूर्व जन्मों के हिसाब-किताब पूरे होते हैं। यह भी सीखा कि जीवन में कुछ करना है तो हमेशा छोटा बनकर रहें। यह भी जाना कि अमृतवेला हमें कोई लक्ष्य लेकर बैठना चाहिए कि हमें आज बाबा से क्या अनुभूति करना है। आज्ञाकारिता का गुण सीखा। संगठन में कैसे रहना है। जीवन में आई विषय परिस्थिति में अपने मन की स्थिति को कैसे रखें, ड्रामा का ज्ञान कैसे और कहां यूज करना है आदि बातों को गहराई से जानने-समझने का मौका मिला।

● बीके नीतू (27) बीए, राजपुरा, पटियाला, पंजाब

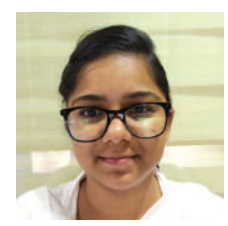

मैं ज्ञान में साढ़े तीन साल से हूं। मेरा पहले से ही ट्रेनिंग में आने की कोई प्लानिंग नहीं थी। एक दिन में ही आने की प्लानिंग बनी और यहां आ गई। यहां जैसे ही ट्रेनिंग शुरू हुई और पहले ही दिन सभी 600 कन्याओं के फोन जमा किए गए। इससे मुझे बेहद खुशी हुई। क्योंकि फोन के कारण हम जो भी कार्य करने हैं उसमें पूरी एकाग्रता के साथ नहीं कर पाते हैं। पहले मुझे मंच से बोलना नहीं आता था, मंच पर पहुंचने ही झिझक महसूस होती थी, इस ट्रेनिंग के बाद अब मैं बेझिझक बोल सकती हूं। यहां जाना कि जीवन में कोई परिस्थिति आती है तो बाबा की मदद लेकर कैसे उसे पार करना है। यहां संस्थान की वरिष्ठ दादियों, मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती जी के जीवन के अनुभव सुने इससे मुझे प्रेरणा मिली कि जीवन में कैसे आगे बढ़ना है। पहले दिन दादी रतनमोहिनी जी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। साथ ही अब जीवन का उद्देश्य स्पष्ट हो गया है कि क्या करना है। यहां जाना कि हम पहले योग्य बनें बाकी जीवन में सब अपनेआप मिल जाएगा।

● बीके शिवानी (24) एमकॉम, पातड़ा, पटियाला, पंजाब

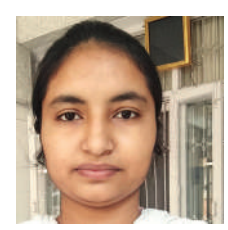

एक महीने चली ब्रह्माकुमारी टीचिंग ट्रेनिंग का हर दिन विशेष अनुभव वाला रहा। रोज नई-नई बातें सीखने को मिलीं। पूरे ट्रेनिंग के दौरान बड़ी दीदियों, दादियों का इतना प्यार-स्नेह मिला जिसे कभी भुलाया जा नहीं सकता है। यह पूरा माह मेरे लिए सदा-सदा के लिए यादगार बन गया। जिस आशा, उम्मीद के साथ इसमें भाग लेने के लिए आई थी उससे कई गुना पाया। यहां दीदियों ने इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पूरी गाइड लाइन हम सभी कुमारियों के लिए बताई। साथ ही हम सभी के लिए मोटिवेट किया कि यदि यह त्याग-तपस्या का जीवन अपनाया है तो सदा ऐसे श्रेष्ठ कर्म करना, एक आदर्श ब्रह्माकुमारी बनकर के जीवन में आगे बढ़ना। मुझे ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान तो कई वर्षों पहले मिल गया था लेकिन ट्रेनिंग से मुझे इस आध्यात्मिक यात्रा में और गहराई से जाने, समझने की प्रेरणा मिली।

● बीके सिमरन (24), बीए, अंबाला, पंजाब

महासम्मेलन] आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा दया एवं करुणा विषय पर पांच दिवसीय राजनेता सम्मेलन आयोजित

आध्यात्म के समावेश से बदलेगी राजनीति की दशा और दिशा

देशभर से विधायक, सांसद, पूर्व मंत्री और पार्टियों के पदाधिकारियों ने लिया भाग

» शिव आमंत्रण, आबू रोड/राज.। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन में आध्यात्मिक सशक्तिकरण द्वारा दया एवं करुणा विषय पर पांच दिवसीय राजनेता सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देशभर से मंत्री, सांसद-विधायक और पार्टियों से जुड़े पदाधिकारी व जनप्रतिनिधियों ने भाग लिया। पांच दिन मंथन-चिंतन में यही निष्कर्ष निकला कि राजनीति में योग और आध्यात्म के समावेश से ही राजनीति की दशा और दिशा बदलेगी। जब राजनेता आध्यात्मिक होगा तो वह समाज कल्याण के भाव के साथ सर्वजन हिताए, सर्वजन सुखाए की भावना के साथ कार्य करेगा। अलग-अलग आठ सत्रों में 50 से अधिक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि शांति के सागर, सदा सुखदादा, परमपिता परमात्मा के इस घर में सभी राजनेताओं का स्वागत है। हम सभी एक परमपिता परमात्मा की संतान आपस में भाई-बहन एक ही ईश्वरीय परिवार के हैं। इस स्मृति को बार-बार याद करने से आत्मा स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करती है। परमात्मा की संतान होने के नाते हम जिससे भी मिलें तो सभी को खुशियां बांटें। एक-दूसरे के प्रति क्षमा की भावना, शुभभावना रखें। इससे ही दुआओं का खाता बढ़ता जाता है।
गुजरात से आए पूर्व मंत्री व विधायक गिरीश चंद्र परमार ने कहा कि संस्था द्वारा बदलाव के कार्य किए जा रहे हैं। परमात्मा के बुलावे पर यहां आया हूं। लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने संदेश भेजकर कहा कि मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि ब्रह्माकुमारीज द्वारा राजनेताओं के आध्यात्मिक सशक्तिकरण के लिए सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इससे लाभ लेकर राजनेताओं में दया, करुणा और जनहित की भावना का विकास होगा। ब्रह्माकुमारीज संस्थान जल कल्याण के लिए कई वर्षों से निरंतर कार्य कर रहा है। उप्र में राज्य महिला आयोग की सदस्य सुनीता बंसल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के बाद पूरा जीवन बदल गया। जीवन जीने का तरीका बदल गया। मेरी सोच बदल गई। परमात्मा के आशीर्वाद से राज्य महिला आयोग के माध्यम से अपनी सेवाएं दे रही हूं। राजयोग मेडिटेशन की बदौलत जीवन में विपरीत परिस्थितियां आईं लेकिन मन को कभी कमजोर नहीं होने दिया। इस ज्ञान से मुझे यह सीख मिली कि यदि कोई हमारे साथ बुरा बर्ताव कर रहा है तो हमें उनके प्रति रहम का भाव रखना चाहिए, क्योंकि कहीं न कहीं वह कमजोर हैं।
मुख्यालय संयोजिका बीके ऊषा दीदी ने कहा कि आप सभी यहां पांच दिन तक इस पवित्र वातावरण का पूरा लाभ लें और यहां से समाज और देश को नई राह पर ले जाने का संकल्प लेकर जाएं।
नेपाल से आए कवासोती के महापौर विष्णु विशाल, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके राजू भाई, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी, बड़ोदरा से आईं बीके अरुणा दीदी, मैसूर के बीके रंगनाथ, बीके मंजुला ने भी अपने विचार व्यक्त किए। बीके अर्चना बहन और बीके युगरतन ने गीत की प्रस्तुति दी। संचालन बीके श्रीनिधि, बीके सपना और बीके रुपेश ने किया।

हम बदलेंगे, जग बदलेगा

दुनिया में यदि कहीं असली स्वर्ग है तो माउंट आबू में है। यहां आकर तीन दिन से आत्मिक शांति, खुशी की अनुभूति हो रही है। यहां जो ज्ञान दिया जाता है कि पहले खुद को बदलो, हम बदलेंगे तो विश्व बदलेगा। इसलिए सबसे पहले हमें खुद को बदलना होगा। एक दिन जरूर पूरी दुनिया में स्वर्ग होगा। ब्रह्माकुमारीज द्वारा सामाजिक क्षेत्र में कई कार्य किए जा रहे हैं।

■ अमर शर्मा देवराज
सांसद, नेपालगंज, नेपाल

राजनेता खुद को सेवक मानकर काम करें

राजनेता खुद को एक सेवक मानकर काम करें, यदि सांसद-विधायक मानकर चलेंगे तो अभिमान आ जाएगा। अभिमान आने से आप जनता से दूर हो जाएंगे। अपना स्वभाव सरल बनाएं ताकि आम व्यक्ति आपको अपनी बात बता सके। ब्रह्माकुमारीज संस्थान कुरुतियों को दूर करने का कार्य कर रही है। 20-25 साल पहले राजनीति में इतनी महिलाएं नहीं थीं। आज सरपंच से लेकर देश में कैबिनेट मंत्री, मुख्यमंत्री का पद महिलाएं संभाल रही हैं। मातृ शक्ति हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा साबित कर रही हैं।

■ संध्या राय, सांसद, भिंड, मप्र

यहां आकर खुशी हुई

यहां आकर बहुत खुशी हुई। साथ ही शांति की अनुभूति हुई। यहां बहुत ही सेवाभाव से भाई-बहनें समाज के कल्याण में जुटे हुए हैं। साथ ही यहां आध्यात्मिक ज्ञान को समझने का मौका मिला। इसके लिए ब्रह्माकुमारीज संस्थान का आभारी रहूंगा।

■ डॉ. सतीश सिंह सिकरवार,
विधायक, ग्वालियार, मप्र

सेवा का संकल्प लें

विचारणीय प्रश्न है कि राजनीति और राजनेता का जो कर्तव्य होता है, क्या हम उसका पालन कर रहे हैं? मैं सामान्य परिवार से हूं। एक फौजी का बेटा हूं। लोगों की सेवा करने के लिए मैं राजनीति में आया हूं। आज क्षेत्र की एक छोटी से छोटी बेटी मुझे बलराज भैया कहकर बुलातीं हैं और जानती हैं। मैं बेटियों का मान बढ़ाने के उद्देश्य से ही राजनीति में आया था। यहां से सभी देश और गरीब की सेवा करने का संकल्प लेकर जाएं।

■ बलराज कुंडू, विधायक, मेहम, हरियाणा

करुणा का भाव जागृत हो

दया और करुणा बहुत बड़ी शक्ति है। राजनेता के हाथ में देश का भाग्य होता है। यदि राजनेता में दया और करुणा आ जाए तो दुनिया की सूरत बदल जाएगी। पांच विकारों से ग्रसित व्यक्ति में दया और करुणा का भाव जागृत नहीं हो सकता है। इसके लिए हमें आत्मिक स्वरूप की पहचान होना जरूरी है। जब हमें यह भान रहता है कि मैं एक आत्मा हूं तो स्वतः दया एवं करुणा का भाव जागृत हो जाता है।

■ बीके बृजमोहन भाई, अतिरिक्त महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

हम जीवन में शुद्धि लाएं

राजनेता अपने खानपान के अंदर परिवर्तन लाएं। अशुद्धि को दूर कर जीवन में शुद्धि लाएं। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये जीवन की कमजोरियां हैं। ये कमजोरियां इसलिए आईं क्योंकि कहीं न कहीं जीवन में शक्ति की कमी है। अंधेरे को कोई स्त्रोत नहीं है, जब प्रकाश जलाते हैं तो अंधेरा अपनेआप दूर हो जाता है। ईश्वर के पास जब हम जाते हैं तो कहते हैं कि हे प्रभु हम पर इतनी दया, करुणा करना।

■ बीके लक्ष्मी, राष्ट्रीय संयोजिका, राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग।

जो हमारे बीके भाई-बहन बोलते हैं कि इस धरती पर फिर से स्वर्ण युग आएगा तो एक दिन जरूर वह दिन आएगा, दुनिया बदलेगी। ब्रह्मा बाबा ने इस कार्य की नींव 1936 में ही रख दी थी। हमारी सरकारें आज बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ की बात कर रही हैं जबकि ब्रह्मा बाबा ने इस कार्य की शुरुआत तो वर्षों पहले ही कर दी थी।

■ महेश चंद्र गुप्ता, विधायक, बदायूं, उप्र

जब एक आध्यात्मिक व्यक्ति बड़े पद पर पहुंचता है तो देश व समाज में कैसे बदलाव आता है इसका सबसे बड़ा उदाहरण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू हैं। उन्होंने सबसे पहले राष्ट्रपति भवन में मांसाहार बंद कराया और वह खुद अलसुबह 4 बजे राष्ट्रपति भवन के मंदिर में होने वाली आरती करती हैं। यह बहुत बड़ा संदेश है।

■ सीएच विजयशंकर, पूर्व सांसद, मैसूर

यहां आध्यात्म के रूप में प्रेम, भाईचारा, खुशी को बिखेरने का कार्य किया जा रहा है। मुंगेर में विश्व के एक मात्र योग का विश्वविद्यालय है जहां से योग की शिक्षा दी जाती है। ब्रह्माकुमारीज आध्यात्म के द्वारा लोगों के जीवन में खुशी लाने के लिए कार्य कर रही है। हमारे यहां पुष्पक विमान हुआ करते थे, आज हम हवाई जहाज में चलते हैं।

■ प्रणव कुमार, विधायक, मुंगेर, बिहार

हमारा भारत समृद्ध भारत तभी बनेगा, जब हमारे राजनेताओं के जीवन में आध्यात्मिकता होगी। लोकतंत्र को विधायिका, कार्यपालिका और व्यवस्थापिका चला रही है। करुणा और दयालुता हमारे संस्कृति के मूल हैं। यहां आकर आध्यात्मिक शांति की अनुभूति हुई। इस ज्ञान को राजनेता प्रचारित करें।

■ प्रदीप जायसवाल, अध्यक्ष, मप्र खनिज निगम व विधायक, वारासिवनी, मप्र

ब्रह्माकुमारीज हमें ज्ञान के माध्यम से वहां ले जाने का प्रयास कर रही है जहां हमें साक्षात् परमात्मा के दर्शन होंगे। आध्यात्म जगत में हमारे भाई-बहन जो शोध, अध्ययन कर रहे हैं जब तक हम उस मार्ग पर चलेंगे नहीं तो हमें अनुभूति नहीं होगी। उनके बताए मार्ग पर चलकर ही हम मानव सेवा, समाज सेवा और देश में सेवा में अग्रसर हो सकते हैं।

■ पुरुषोत्तम लाल तंतुवाय,
विधायक, (हटा) दमोह, मप्र

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

पिछले अंक से क्रमशः

सुबह उठते ही ज्ञानसूर्य की आवाज कानों में पड़े

इस प्रयोग से घर का माहौल बदल जाता है पूरी तरह

परमात्मा ज्ञानसूर्य से शक्तियों की किरणें और ज्ञान चन्द्रमा से शीतलता कि लहरें। ज्ञानसूर्य से सत्यता की शक्ति और ज्ञान चन्द्रमा से शीतलता की शक्ति। हम एक विजन बना लें। हमारे ऊपर एक तरफ है ज्ञानसूर्य, दूसरी तरफ है ज्ञान चन्द्रमा। एक तरफ शिव बाबा चमक रहा है दूसरी तरफ संपूर्ण ब्रह्मा बाबा, शिव बाबा से किरणें आ रही हैं शक्तियों की दस-दस सेकण्ड के लिए ड्रिल करेंगे। दस सेकण्ड के लिए ज्ञान चन्द्रमा से किरणें आ रही हैं। ये ड्रिल है। ऐसा करने से हमारा योग लंबे समय तक स्थिरता के साथ सफल हो जाता है। ऐसे ही हमें नहीं सोचना है कि चलो उठो बाबा को याद कर लें। बाबा को भिन्न-भिन्न स्वरूपों से भिन्न-भिन्न मेथड से याद करना है। सवेरे के बात के लिए भी मैं कुछ कह दूं। सवेरे सबसे पहले हमें ये निश्चित करना चाहिए कि उठते ही हम क्या संकल्प करेंगे। मैं कुछ सिम्पल टेक्निक आपके सामने रख दूं। आप सभी के घर में मोबाइल, टेप रिकार्डर या सीडी प्लेयर होंगे। आप सवेरे उठते ही पहले 15 मिनट अव्यक्त बाबा की या साकार बाबा की मुरली चला दो, अपने घर में। आपको ऐसा लगेगा बाबा आ गया। हमारे घर में ही आ गया। इससे वायब्रेशन्स बहुत पावरफुल हो जाएंगे। आपके अंदर यदि सुस्ती होगी, न उठने की इच्छा होगी वह भी समाप्त हो जाएगी। अपने पास ही रख लो टेप बस बटन दबाया और बाबा की आवाज कानों में पड़ने लगी।

ज्ञान सरोवर में करवाए कई प्रयोग

हमने ज्ञान सरोवार में ये प्रयोग कराए। कुछ दिन ऐसा रखा कि सवेरे उठते ही साकार बाबा की कैसेट 15 मिनट के लिए चली। आप आश्चर्य करेंगे कि वे लोग भी जो जीवन में सवेरे कभी नहीं उठेंगे। सो नहीं पाए, तब इतने फ्रेस हो गए। सवेरे ही भगवान की आवाज कानों में पड़े। पहला संकल्प उठते ही संकल्प करें कि भगवान मेरा संबंधी बन गया है। उठते ही संकल्प करें, आंख खुली और सामने बाबा खड़ा है। उठते ही संकल्प करो मैं इतना भाग्यवान हूं। जिसका शृंगार करने के लिए स्वयं भगवान को आना पड़ा।

बाबा मेरा इंतजार कर रहा है

संकल्प करें कि बाबा मुझे बहुत प्यार करता है। बाबा वतन में मेरा इंतजार कर रहा है कि आओ बच्चे ऊपर आ जाओ और मुझसे सारे खजाने ले जाओ। संकल्प करें मेरा कितना बड़ा भाग्य है। सारा संसार सोया हुआ है और मैं भगवान से वरदानों की प्राप्ति कर रहा हूं। ये संकल्प आपको जागृत करेंगे। इन संकल्पों का बड़ा महत्व है। नहीं तो क्या करते हैं- बाबा गुडमॉर्निंग और फिर सो गए। नींद आने लगी इससे बाबा खुश नहीं हो जाता कि गुडमॉर्निंग कर ली हमने और भगवान राजी। ऐसा नहीं है इतना भोला वह नहीं है कि बस इतने में ही राजी हो जाए। सवेरे उठकर अपने को जागृत करें। अच्छे संकल्पों से

बाबा का करें आह्वान

बाबा का आह्वान कर लें अपने घर में बाबा आपको निमंत्रण है आप हमसे मिलने के लिए नीचे आ जाओ। भोग तो आपको बाद में खिलाएंगे। बाबा से बात करें। भगवान से बात करने का सुख कितना जबरदस्त होता है। इसको अनुभव में लाना है। बात करने का अर्थ यह नहीं है कि हम बाबा की महिमा करेंगे कि आप प्यार के सागर हो, सुखों के सागर हो, शांति के सागर हो। इससे भी काम नहीं चलेगा। तो केवल बाबा की महिमा करना गुणगान करना ये बातें करना नहीं है। ये तो भक्ति में हम सब करते आए हैं। जैसे हम बात करते हैं एक-दूसरे से भगवान को अपने साथ खड़ा देखकर उससे दिल की बातें करना और तीसरा लक्ष्य रखेंगे। जो अभ्यास हम यहां चर्चा में लाएं। उसको भिन्न-भिन्न रूप से अभ्यास में लाना। डेली सवेरे ये अभ्यास करना है कि कहीं न कहीं सकाश जरूर देनी है। यदि योग को मनोरंजन बना दिया जाए तो सवेरे का समय भी बहुत सफल होगा और हमें योग करने की रुचि होगी। उठने को मन करेगा। ऐसी स्थिति आएगी कि हम रोज इंतजार करेंगे कि कब सवेरा हो और हम भगवान से बातें करें। तो ये बहुत सुन्दर अवसर हम सभी के सामने आया है।

समाने की शक्ति जीवन में लाती है महानता

स्व-प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व-प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

समाने की शक्ति से हम अपने जीवन मूल्य को समाज में बढ़ा सकते हैं

वास्तव में समाने की शक्ति के लिए दो गुणों को धारण करना जरूरी है तब समाना आसान हो जाता है। जैसे सागर हर नदी के किचड़े वाला पानी समाता है। वह कभी नदियों से यह नहीं कहता कि आप अपना किचड़ा मुझमें नहीं डालो। परन्तु उस किचड़े को सागर अपने में भी नहीं रखता, अपितु भारी चीज को वह अपने भूगर्भ में समा लेता है और हल्के किचड़े को किनारे पर फेंक देता। सागर की विशालता और गंभीरता के कारण ही उसमें से कीमती रत्न और मोती प्राप्त होते हैं। हम भी समाने की शक्ति को तभी विकसित कर सकते हैं जब हृदय में सागर जैसी विशालता और स्वभाव में गंभीरता हो। कई लोग अपने किचड़े जैसी बातें डालने आएंगे लेकिन उसमें से ग्रहण करने जैसी बात को धारण करके बेमतलब की चीज़ों को अनसुना कर देना है। उसे दिल में धारण कर अपने मूड को खराब नहीं करना है। इस समाने की शक्ति से ही हम अपने जीवन का मूल्य समाज में बढ़ा सकते हैं।

इस बात पर एक दृष्टांत अवलोकनीय है

एक खिलौना बेचने वाला था। उसके पास तरह-तरह के खिलौने थे। वह रोज बाजार में अपने खिलौने बेचता था। एक दिन उसके सारे खिलौने बिक गए लेकिन उसके पास तीन गुड़िया थी, जिन्हें किसी ने नहीं खरीदा, तब वह बड़ा उदास होकर आवाज़ लगा रहा था कि शायद इन्हें कोई खरीद ले। इतने में एक सेठ वहां से गुजर रहा था। उसने खिलौने वाले ने पूछा कि इन तीन गुड़ियों की कीमत क्या है? खिलौने बेचने वाले ने एक गुड़िया दिखाकर कहा कि यह गुड़िया दस रुपये की है। दूसरी दिखाकर कहा कि यह सौ रुपये की है और तीसरी दिखाकर कहा कि वह एक हज़ार की है। सेठजी चकित होकर देखने लगे और बोले कि दिखने में तो तीनों एक जैसी हैं फिर यह दाम अलग-अलग क्यों? खिलौने वाले ने एक तार लिया और पहले वाले एक गुड़िया के एक कान में तार डाला तो वह मुख से निकला, फिर दूसरी गुड़िया उठायी और उसके कान से तार डाला तो दूसरे कान से निकल गया। फिर तीसरी गुड़िया उठायी और उसके कान में तार डाला और वह पेट में चला गया। खिलौने वाले ने उस सेठ को बताया कि जो पहली गुड़िया है जिसके कान से तार डाला और मुख से निकल गया वह उस व्यक्ति का जो सुनी-सुनाई बातों को सुनकर उसमें मिर्च-मसाला डालकर चटपटी बनाकर दूसरों को सुनाती है। इसलिए उसका मूल्य बहुत कम सिर्फ दस रुपया है। दूसरी गुड़िया जिसके एक कान से तार डालने पर दूसरे कान से निकल गया उसका मूल्य थोड़ा अधिक है क्योंकि वह दूसरों की सुनी सुनाई बातों पर ध्यान नहीं देती, परन्तु वह दूसरों की अच्छी बातों पर भी ध्यान नहीं देता। लेकिन तीसरी गुड़िया जिसके कान से तार पेट में समा जाता है उसका दाम सबसे अधिक है क्योंकि वह किसी की भी बातों को सुनते हुए अपने में धारण कर लेती है। यह सुनकर वह सेठ बहुत खुश हो गया और वह तीनों गुड़ियों को लेकर चला गया।
कहने का भाव यह है कि अगर कोई किसी की भी बातों को सुनकर उसे फैलाने के बजाय अपने में समा ले वह व्यक्ति सबसे अमूल्य होता है। यह समाने की शक्ति बहुत आवश्यक है। लेकिन कहां समाना है, कितना समाना है और किस विधि से समाना है यह समझ भी जरूरी है।

भगवान मिल गया फिर फिकर कैसी?

आध्यात्मिक उड़ान

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

यदि चिंता है तो मतलब किसी न किसी धारण या मर्यादा में कमी है

एक अव्यक्त वाणी में परमात्मा ने कहा है कि तुम बेफिक्र बादशाह हो, तुम बेगमपुर के बादशाह हो, तुम बिन कौरी बादशाह हो, तुम जैसी मौज इस दुनिया में और कोई नहीं कर सकता। जाओ जाकर ढूंढ़ो और अगर कोई हो तो बाप के सामने लेकर आओ। जैसी मौज तुम्हारी है, वैसी और किसी की नहीं है। सभी ठीक रहा तो उसे पा रहे हैं, सभी फिकरातों से फारीक,

सभी चिंताओं से परे ऐसे ही मौजों की खुशी की। आनंद, उत्सव, उमंग की हमारे जीवन है। फिर भी थोड़ी-थोड़ी फिक्र, थोड़ी-थोड़ी चिंता, थोड़ी-थोड़ी गम, थोड़ी-थोड़ी दुःख साथ-साथ चलते हैं।
जिसको भगवान ने सभी चिंताओं से मुक्त कर दिया है उसे कितना बेफिक्रर रहना चाहिए। गम, दुःख आना ही नहीं चाहिए। अगर आ रहा हैं तो शायद किसी न किसी धारणा में, किसी न किसी मर्यादा में कमी है। भगवान ने हमें बेफिक्र बादशाह बना दिया। किन-किन फिकरों से हमें मुक्त किया? ऐसी वो कौन सी बातें हो सकती हैं जिनकी हमें कोई चिंता नहीं और संसार चिंता करते रहता है।

बाबा ने हमें सब चिंताओं से मुक्त कर दिया

सबसे पहली बात जिससे हमें बाबा ने जिस चिंताओं से मुक्त कर दिया है वो हैं बीमारी। उसके लिए तीन बातें याद रखनी हैं- सबसे पहली बात ऐसी दिनचर्या, स्वास्थ्य चर्या ,भोजन चर्या हो जिससे बीमार हो ही ना। ऐसी विधि हो, खाने की चर्या हो, जिससे बीमार ही न पड़े। तीन शब्द हैं एक है निरोग दूसरा है आरोग्य और तीसरा है स्वास्थ्य। तीनों ही अलग हैं। निरोग अर्थात् बीमारी है अब उसको हटाओ। आरोग्य अर्थात् क्या खा रहे जो खा रहे वो ऐसा खा रहे कि जिससे बीमारी ना हो, फिर हटाने का सवाल ही नहीं। ये उसके ऊपर की अवस्था है। स्वास्थ्य सबसे ऊंची अवस्था है। उसका संबंध अध्यात्म से हैं। स्व स्थिति में स्थित हो जाना। ऐसी दिनचर्या हो जिसमें हम टहलें भी, जिसमें एक्सरसाइज हो, जिसमें भोजन का कंट्रोल हो और जहां कंट्रोल ही नहीं है वहां दुनियाभर की बीमारी है। दूसरा खून जांच या बॉडी चेकअप साल में कम से कम एक बार। तीसरी बात अगर बीमार हो भी गए तो खुशी-खुशी बीमारी से सामना करना है। दुखी नहीं होना है। मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ। सबके साथ तो ठीक हुआ। पहले तो स्वीकार कर लेना है बीमारी आ गई है, ठीक है। बीमारी को भी सेवा का साधन बना देना है। या तो मन्सा सेवा या तो दूसरे कि सेवा। दूसरा हैं ब्राह्मणों को संसार में कीमत कितनी बढ़ रहीं है, इसकी कोई चिंता नहीं है। ब्राह्मण मौज में हैं। संसार में बहुत कुछ होते रहेगा। कभी बहुत महंगाई होगी, कभी कम होगी, ये सब होते रहेगा।

मनोविज्ञान ने एक स्टैटिक्स निकाला जिसमें कहा गया कि 40 पर्सेंट चिंता जो है वो काल्पनिक है, वो हैं ही नहीं हम उसका निर्माण कर रहे हैं। अगर वास्तव में देखा जाए तो वो है ही नहीं। उसके बाद 30 पर्सेंट जो चिंता है वो पुरानी हैं। पहले की है जिसका अभी हम कुछ कर नहीं सकते। बीते हुए कल के गलत निर्णय जो ले ली जो हो गया वो हो गया। भगवान भी नहीं बदल सकता बीते हुए कल को और हम उसके बारे में सोच रहें हैं। ऐसा क्यों कर दिया, हमारे जीवन में ऐसा क्यों हुआ, क्यों इस व्यक्ति ने मुझे ऐसा किया, मेरे साथ ऐसे नहीं होना चाहिए। उसका कुछ किया नहीं जा सकता। वो हो गया उसे स्वीकार कर लो और आगे बढ़ो। जितना जो अतीत को जोर से पकड़ा हुआ है उतना वो दुखी है। धो रहे हैं अतीत को सिर पर, भुल ही नहीं पा रहे, बार-बार कोई मिलता हैं तो वही बात की चर्चा कर रहे। दुख से निकले नहीं हैं अभी तक। जो हमारी चिंता है वो दूसरों के आलोचना की वजह से हैं। दूसरों ने विरोध किया, दूसरों ने हमारी निंदा की हम उसके बारे में सोचते हैं और हमें यह भी पता है उन्होंने जो किया वह गलत किया वो सत्य नहीं है। ईर्ष्या वश कर रहे और हमें क्यों चिंतित होने की जरूरत है। अगर हमें कोई कहता है तुम बहुत अहंकारी हो पर हमें पता है हम अंदर से हैं नहीं और जो अंदर से हैं नहीं उसे दूसरों के कहने से कुछ होता है क्या। जिसको जो मर्जी आए वो कहेगा, उससे कुछ होता नहीं है।
कोई ये कह दे तुम बहुत स्वार्थी हो, हमें पता है हम नहीं हैं तो किसी के कहने मात्र से कुछ नहीं होता। उसके लिए चिंतित होने की आवश्यकता नहीं। चिंता स्वास्थ्य की वजह से है। ये दर्द ,वो दर्द परंतु अगर बीमार है बाबा को साथ लेकर सो गोली की जरूरत नहीं पड़ेगी। अगर बीमार भी हैं बीमारी से मुक्ति के लिए चिंता से कुछ नहीं होगा, बीमारी और बढ़ेगी। हॉस्पिटल में पड़े हैं फैक्चर हो गया जो भी आता है उसको पूरी कहानी सुनाते हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ के सिद्धांत को धारण करने से भारत विश्वगुरु बन चमकेगा: राज्यपाल

उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस भी रहे मौजूद

» शिव आमंत्रण, नागपुर/महाराष्ट्र। ब्रह्माकुमारीज की विदर्भ क्षेत्र की सेवाओं के 50 साल होने पर सुवर्ण महोत्सव तथा विश्व शांति सरोवर का चौथा स्थापना दिवस मनाया गया। विश्व शांति सरोवर के हार्मनी हॉल में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। करीब 4000 से भी अधिक लोगों ने भाग लिया। इसमें राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित, उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस, अमृता फडणवीस, भाजपा अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुळे, लोकमत ग्रुप के चेयरमैन विजय दर्डा, पूर्व मेंबर ऑफ पार्लियामेंट अजय संचेती, भाजपा कोषाध्यक्ष किरट भंसाली शामिल हुए।

संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका व महाराष्ट्र की जोनल इन्चार्ज संतोष दीदी, माउंट आबू से चेअरपर्सन, शिक्षा प्रभाग बीके मृत्युंजय, वाइस चेअरपर्सन, बीके शीलू दीदी, ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा तथा मुंबई से मीडिया विंग के नेशनल को-ऑर्डिनेटर बीके निकुंज शामिल हुए। विश्व शांति सरोवर की संचालिका बीके रजनी दीदी, सहसंचालिका बीके मनीषा दीदी मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

कार्यक्रम में राज्यपाल पुरोहित ने कहा कि यहां की टीम ने ऐसा वातावरण बनाया है कि अभी हमे सतयुग देखने को मिल रहा है। चारों ग्रंथ, महाभारत, गीता, रामायण, भागवत हर घर में होना जरुरी है। माउंट आबू में सारी व्यवस्थाएं, खाना, वातावरण सराहनीय है। यह आध्यात्मिक जीवन देखना चाहिए। निःस्वार्थ जीवन जी रहे है। आपके सिद्धांत को धारण करने से ही भारत विश्वगुरु बनेगा। राष्ट्र चमकेगा, भारत चमकेगा। उपमुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि मन की शुद्धता साबुन या शेम्पू से नहीं होती है। मन की शुद्धता होती है विचारों की सफाई से। ब्रह्माकुमारीज में दिए जा रहे विचारों से मन शुद्ध होगा। यहां की व्यवस्था से समाज की सेवा होती है। भारतीय संस्कृति में सिखाया है कि धन-सम्पत्ति से अधिक महत्वपूर्ण हमारा चरित्र है।

मुख्यमंत्री को परमात्मा का स्मृति चिंह्न प्रदान किया

» शिव आमंत्रण, भरतपुर/राज.। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के भरतपुर आगमन पर उनका स्वागत करने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए बीके कविता एवं बीके बबीता। साथ ही उन्हें माउंट आबू आने का भी निमंत्रण दिया।

मनोस्थिति नियंत्रण में होगी तो खुशी और शक्ति में भी वृद्धि होगी

» शिव आमंत्रण, समस्तीपुर/बिहार। रेल मंडल और ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में समस्तीपुर रेल मंडल कार्यालय के सभागार में तनाव प्रबंधन एवं मेडिटेशन कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका दीप प्रज्ज्वलन द्वारा विधिवत् उद्घाटन डीआरएम आलोक अग्रवाल, माउंट आबू, राजस्थान से पधारे वरिष्ठ राजयोगी आत्मप्रकाश, एडीआरएम जेके सिंह ने संयुक्त रूप से किया।

राजयोगी आत्मप्रकाश ने कहा कि तनाव अर्थात् परिस्थिति बट्टा मनोस्थिति। परिस्थिति अर्थात् जो बातें लोगों के द्वारा समय-समय पर हमारे पास आती रहती हैं, जिन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है, लेकिन मनोस्थिति तो हमारे नियंत्रण में हो सकती है। हम मनोस्थिति के बजाय परिस्थितियों पर नियंत्रण करने की कोशिश करते हैं, इससे हमारा तनाव घटने की बजाय बढ़ता रहता है। हमारी मनोस्थिति हमारे नियंत्रण में होगी तो हमारी खुशी और शक्ति दोनों में ही वृद्धि होगी और हम किसी भी प्रकार की परिस्थिति को आसानी से संभाल सकेंगे। इसलिए किसी ने बहुत सही कहा है कि शक्तिशाली लोगों के लिए परिस्थिति एक अवसर होती है, साधारण लोगों के लिए चुनौती और कमजोर लोगों के लिए समस्या का पहाड़ होती है। तनावग्रस्त मन हमारे शरीर को रोगग्रस्त करता है। जब हम तनाव में होते हैं तो शरीर में स्ट्रेस हार्मोन्स का निर्माण होता है शरीर की अरबों-खरबों कोशिकाओं को प्रभावित करते हैं। पूर्व डीआरएम आलोक अग्रवाल ने राजयोगी भ्राता आत्म प्रकाश जी को पुष्पगुच्छ एवं मेमेंटो देकर व शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया व उनका एवं ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अन्य आगंतुक सदस्यों का स्वागत किया। संचालन सीनियर डीपीओ ओमप्रकाश सिंह व ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कृष्ण भाई जी ने किया। बीके सविता बहन व बीके तरुण सहित समस्तीपुर रेल मंडल के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

ब्रह्माकुमारी बहनें परमात्मा के निर्देश पर समाज को एक सही दिशा प्रदान कर रही हैं: राज्यपाल अर्लेकर

» शिव आमंत्रण, शिमला सुन्नी/हिप्र। स्थानीय उप सेवाकेंद्र के परिसर में चतुर्थ वार्षिक आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें संस्था के कार्यकारी सचिव डॉ. बीके मृत्युंजय, बीके शिविका मुख्यालय समन्वयक शिक्षा प्रभाग, वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश तथा जालंधर पंजाब से वरिष्ठ राजयोगी सुरेन्द्र ने अपनी उपस्थिति दर्ज करके इस वार्षिक उत्सव की शोभा में चार चांद लगा दिए। इस सम्मेलन में 800 लोगों ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ अर्लेकर ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें वर्ष 1936 से ही बाबा के निर्देश पर समाज को एक सही दिशा प्रदान कर रही हैं। आज समाज को आध्यात्मिक ज्ञान की जरूरत है। सुन्नी के इर्द-गिर्द 100 गांव तक व्यसन मुक्त करने के पुण्य कार्य में संस्था के जिन सदस्यों ने सहयोग दिया है वे प्रशंसा के पात्र हैं। इस अवसर पर ऐसे सेवाधारी बहनों को मुख्य अतिथि ने अपने हाथों द्वारा एक-एक प्रतिष्ठा प्रमाण पत्र भी दिया। बीके शिविका ने राजयोग से गहन शान्ति की अनुभूति कराई। बीके प्रकाश ने स्वागत किया। सेवाकेंद्र संचालिका बीके शकुन्तला ने सभी अतिथियों का शब्दों से स्वागत करते हुए आभार माना। संचालन सुरेन्द्र ने किया। अंत में सभी को बाबा के घर की टोली और ब्रह्माभोजन भी दिया गया।

कथा वाचिका जया किशोरी का किया सम्मान

» शिव आमंत्रण, लोहरदगा (गुमला) झारखंड। सुप्रसिद्ध कथावाचिका जया किशोरी का साप्ताहिक गीता पाठ संपन्न हुआ, जहां ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के स्थानीय शाखा की बहनों द्वारा गुलदस्ता, शाल एवं ईश्वरीय उपहार देकर सम्मानित किया गया। संस्था की तरफ से बीके बबली, बीके सस्मिता, बीके सुशान्ति, बीके निर्मला, बीके देवंती एवं बीके विनोद उपस्थित थे।

मन यदि शांत और स्थिर है तो हम स्वस्थ रह सकते हैं

» शिव आमंत्रण, गोरखपुर उप्र। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के तत्वावधान में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत पांच दिवसीय स्वर्णिम भारत निर्माण अभियान आयोजित किया गया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के दीक्षा भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुंबई से आए मोटिवेशनल ट्रेनर प्रो. डॉक्टर ई वी स्वामीनाथन ने कहा कि यदि हमारा मन शांत, स्थिर और प्रसन्न है तो हम स्वस्थ एवं संपन्न बन सकते हैं और यह दुनिया हमारे लिए बेहतर। हमें जरूरत है शारीरिक व्यायाम की तरह मानसिक स्वास्थ्य के लिए मानसिक व्यायाम सीखने की। हम अपने मन को मित्र बना दें, दोस्त बना दें, अपने मन की भाषा को समझ कर मन से बात करें तो वह हमारी बात को समझेगा और वही संकल्प करेगा जो हमारे लिए लिए बेहतर होगा। ब्रह्माकुमारीज नेपाल की सह निदेशिका बीके कमला दीदी, माउंट आबू से आए बीके वीरेंद्र, अधिष्ठाता, छात्र कल्याण प्रोफेसर अजय सिंह, गोरखपुर शाहपुर शाखा प्रभारी एवं अभियान की संयोजिका बीके पारुल दीदी, बीके मनोज दीदी, बीके दुर्गा, नेपाल की बीके लक्ष्मी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कुमारी प्रियांशु व यामिनी डांस ग्रुप के बच्चों के देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति दी।

तप-साधना की राह] इंदौर में तीन दिनी दिव्य अलौकिक प्रभु समर्पण समारोह आयोजित

इंजीनियरिंग, बीटेक, नर्सिंग, एमएससी करने के बाद अपनाई आध्यात्म की राह, 24 बेटियां बनीं ब्रह्माकुमारी

और भावुक हो गए माता-पिता

दुल्हन की तरह सफेद साड़ी में सजी कुमारियां। माता-पिता और भाई-बहनें चुनरी की चादर बनाकर जब अपनी बेटियों को स्टेज पर ले गए तो लोग भावुक हो उठे। माता-पिता की आंखों से आंसू छलक आये। लेकिन ये आंसू दु:ख के नहीं खुशी के थे। इन्हीं खुशी लिए आंसुओ को पोछते हुए बेटियों के माता-पिता बोले-आज मेरा जीवन धन्य हो गया। दैवी स्वरूप बेटियों को पाकर। मेरे कितने जन्मों के पुण्य कर्म होंगे जो इस जन्म में शक्ति स्वरूपा बेटी मिली। आज मेरी बेटी ने अपना जीव समाज के लिए अर्पित करने लोगों का कल्याण करने का जो महान कार्य करने का संकल्प लिया है, इससे बढ़कर कुछ हो नहीं सकता है। बेटियों के इस शुभ संकल्प से मेरा मान बढ़ गया। ये जीवन सफल हो गया।

» शिव आमंत्रण, इंदौर। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के जोनल मुख्यालय ओम शांति भवन, न्यू पलासिया द्वारा तीन दिवसीय दिव्य अलौकिक समर्पण समारोह आयोजित किया गया। खण्डवा रोड स्थित समारोह परिसर मैरिज गार्डन में आयोजित इस दिव्य आयोजन में मप्र, राजस्थान और छत्तीसगढ़ से सात हजार से अधिक लोग पहुंचे। समारोह में बीटेक, इंजीनियरिंग, एमए, एमएससी, नर्सिंग करने के बाद 24 बेटियों ने आध्यात्म की राह पर चलते हुए ब्रह्माकुमारी बनकर समाजसेवा, समाज कल्याण और ईश्वरीय मार्ग पर अपना जीवन अर्पित करने का संकल्प किया। दुल्हन के रूप में सजधजकर सभी बेटियों को माता-पिता और परिजन स्टेज तक ले गए, जहां उन्होंने परमात्मा शिव के यादगार शिवलिंग पर माला पहनाकर परमात्मा को जीवनसाथी, साजन के रूप में स्वीकार करने का संकल्प लिया। सभी बहनों का समर्पण माता-पिता और परिजन की सहमति से किया गया।

धन्य हैं ये कन्याएं: बीके आरती दीदी

समारोह में जोनल निदेशिका राजयोगिनी बीके आरती दीदी ने कहा कि आज इन बहनों ने परमात्मा को अपनाया है और परमात्मा ने इन बहनों को अपनाया है। धन्य हैं ये कन्याएं। आज से सभी माता-पिता यह सोचें कि आज से हमने अपनी कन्यायों को परमात्मा को समर्पित कर दिया है। अब इनकी जिम्मेदारी स्वंय परमात्मा की है। केवल परमात्मा का परिचय जानना ही नहीं परमात्मा के प्रति अर्पित होना ही परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनना है।

बीके आरती दीदी ने कुमारियों को कराई ये सात प्रतिज्ञाएं-

1) मैं परम प्यारे, परम सद्गुर, परमशिक्षक, परमपिता परमात्मा को सम्मुख रख आज वायदा करती हूं कि मुझे संपूर्ण निश्चय है कि स्वम भाग्यविधाता परमात्मा हम सबका भाग्य बनाने के लिए सहज ज्ञान और राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं, अतः मैं अपना जीवन स्वयं की खुशी से विश्व कल्याण की बेहद सेवा के कार्य के लिए समर्पित कर रही हूं।
2) मैं इस अलौकिक ब्राह्मण जीवन में ज्ञान, योग और पवित्रता की धारणा से संपन्न बन सर्व संबंध एक परमात्मा शिव बाबा से ही जोडूंगी।
3) मेरा यह वायदा सदा पक्का रहेगा कि एक परमात्मा दूसरा न कोई ।
4) मैं स्वंय व दूसरों की आध्यात्मिक उन्नति में सदा सहयोगी रहूंगी।
5) परमात्मा द्वारा जो भी ज्ञान, गुण व शक्तियों के खजाने मिले हैं उन्हें सदा बाटती रहूंगी।
6) सदा संतुष्ट रह सर्व को संतुष्ट करूंगी।
7) मैं हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना और सद भावना रख सभ्यता पूर्ण शुद्ध व्यवहार करुँगी और सर्व को सहयोग देते हुए आपसी स्नेह युक्त संबंध बनाकर अपना अलौकिक आध्यात्मिक जीवन आज समर्पित कर रही हूं।

इन्होंने भी रखे विचार

- राजिम से आई बीके पुष्पा दीदी, न्यू दिगम्बर पब्लिक स्कूल की निदेशिका सिन्दू मेढके, अलविदा तनाव की वक्ता बीके पूनम दीदी, वरिष्ठ राजयोगी बीके सुरेश गुप्ता, न्यायमूर्ति बीडी राठी, धार्मिक प्रभाग के जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके नारायण ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आज परमात्मा भी खुश हो रहे होंगे

डॉ. बीके नलिनी दीदी ने कहा कि आज तो यह दृश्य देखकर परमात्मा भी खुश होंगे और अपने वरदान लुटा रहे होंगे। एक साथ इतनी बहनें उनके कार्य में सहयोगी बनेंगी। आप सभी परमात्मा की शक्ति शिवशक्तियां हो, सदा इस स्वरूप को याद रखना। आप साधारण नहीं हो, क्योंकि स्वयं परमात्मा को जीवनसाथी बनाया है, वह कभी साथ नहीं छोड़ता है। शिव साजन ज्ञान का सागर, पवित्रता का सागर, शांति का सागर, दु:खहर्ता-सुखकर्ता हैं। आज माता-पिता की लाडलियां विश्व की सेवा के लिए अपने कदम बढ़ा रहीं हैं। आप सभी परमात्मा के बताए मार्ग पर चलकर अपना, अपने परिवार का नाम रोशन करें। मीडिया विंग के नेशनल को-ऑर्डिनेटर मुंबई से आये बीके निकुंज ने कहा कि इंदौर में आरती दीदीजी ने सैकड़ों बहनों को आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए प्रेरित किया है। साथ ही हजारों परिवार आज आपका मार्गदर्शन प्राप्त कर अपना जीवन सुख शांतिमय व्यतीत कर रहे हैं।

समर्पण करने वाली बेटियों के अनुभव

- राजस्थान के कोटा से आयीं बीटेक कर चुकी कुमारी सुकृति (32) ने कहा कि पढ़ाई के दौरान ही वैराग्य आ गया था और आध्यात्म की राह अपनाने का संकल्प लिया। आज ब्रह्माकुमारी बनकर खुद को धन्य महसूस कर रही हूं।
- कटनी, मप्र की नर्सिंग का कोर्स करने के बाद ब्रह्माकुमारी बनने वाली कुमारी दुर्गा (28) ने कहा कि यह जीवन परमात्मा के कार्य में काम आया। दूसरों के लिए कुछ करने का सौभाग्य मिला, इससे बड़ा कोई भाग्य नहीं हो सकता है।
- भीकनगांव, खरगो, मप्र की एमए, एमएड करने के बाद ब्रह्माकुमारी बनने का संकल्प लेने वालीं कुमारी संगीता (35) ने कहा कि खुद के लिए तो सभी जीते हैं लेकिन जो दूसरों के लिए जीते हैं ऐसा सौभाग्य सभी को नहीं मिलता है।

इन 24 बहनों ने सपर्पित किया अपना जीवन

भीकनगांव से कुमारी संगीता, ठीकरी, बड़वानी से कुमारी सीमा, शाहपुरा से कुमारी सीमा, शिव शक्ति रिट्रीट सेंटर से कुमारी प्रिया, जोवट से कुमारी प्रियंका, इंदौर से कुमारी अनिता, कुमारी ट्रवेणी, भवानी मंडी राजस्थान से कुमारी कुसुम, कटनी से कुमारी दुर्गा, कोटा से कुमारी सुकृति, जबबपुर से कुमारी ज्योति, इंदौर से कुमारी पूर्णिमा, धमनोद से कुमारी प्रीति, इंदौर से कुमारी किरण और कुमारी दीपिका, कटनी से कुमारी नेहा, कुमारी बेबी, कुमारी संध्या और कुमारी संध्या, महू से कुमारी दिव्या, इकलेरा से कुमारी सकुन, हरियाणा करनाल से कुमारी प्रभा, करनाल से ही कुमारी सोनिया, लखेरा से कुमारी अनीता ने अपना जीवन समर्पित किया।

सूचना के लिए संपर्क करें

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक **शिव आमंत्रण समाचार पत्र** एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।

वार्षिक मूल्य 150 रुपए, **तीन वर्ष** 450
आजीवन 3500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस,
शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही,
राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 9414172596, 9413384884
Email shivamantran@bkivv.org

सेमीनार] उद्योग एवं व्यापार प्रभाग का तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

व्यापार में सफलता के लिए भी जरूरी हैं ईमानदारी और सच्चाई जैसे मूल्य: मुंजाल

» शिव आमंत्रण, आबू रोड/राज.। आर्थिक धनोपार्जन हो या व्यापार सबमें सफलता के लिए मानवीय मूल्यों की जरूरत होती है। व्यापार में उतार चढ़ाव के बीच जीवन में समानता बनाये रखने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान जरूरी है। जब मुश्किलों का पल हो तो उसमें संतुलन के लिए एक ताकत की जरूरत होती है। उक्त उदगार हीरो साईकिल समूह के मैनेजिंग डायरेक्टर पंकज मुंजाल ने व्यक्त किये। वे ब्रह्माकुमारीज संस्थान के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित व्यापारियों के सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि धन कमाना गुनाह नहीं है परन्तु उसमें एक ऐसा संतुलन होना चाहिए। जिससे किसी व्यक्ति को कोई कष्ट ना हो। जब हम धनोपार्जन करते है तो उस समय हमारी अवस्था ऐसी होनी चाहिए। जिससे किसी प्रकार की लालच जैसी चीजों का ज्यादा भाव ना हों। नफा नुकसान में समान स्थिति के लिए राजयोग ध्यान करना जरूरी है। जबसे ब्रह्माकुमारीज संस्थान के परिसर में आया हूँ। तबसे लग रहा है कि किसी अन्य दुनिया में आ गया हूँ।

यहां की व्यवस्था, रहन सहन हर तरह की चीजों का अलग व्यवस्था है। परमात्मा का ज्ञान मनुष्य का जीवन बदल देता है। इसलिए हमें अपने जीन में इसे अपनाना चाहिए।

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि सबसे बड़ा ज्ञान धन है।

जिसके जीवन में ज्ञान धन है उसे स्थूल धन की भी कमी नहीं होती है। क्योंकि स्थूल धन का आधार भी ज्ञान धन है। चाहे आध्यात्मिकता का ज्ञान हो या किसी व्यक्तिगत के बारे में। जहां ज्ञान नहीं वह हर चीज का अभाव देखने को मिलते हैं। हम सब एक परमात्मा की बच्चे हैं। इसलिए यही भाव रखकर जीवन में आगे बढ़ना चाहिए। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके संतोष, व्यापार एवं उद्योग प्रभाग की अध्यक्षा मुम्बई के विले पारले की प्रभारी बीके राजयोगिनी बीके योगिनी, मुख्यालय संयोजिका बीके गीता, एक्टिव सदस्य बीके मोहन, बीके राजसिंह समेत कई लोग उपस्थित थे।

भारतीय दूतावास में पवित्रता का महोत्सव मनाया

» शिव आमंत्रण, सेंट पीटर्सबर्ग। अगस्त का महीना जीवन में सच्चे प्यार और वास्तविक सुरक्षा के आधार के रूप में पवित्रता का संदेश लेकर आता है। बीके चक्रधारी दीदी, बीके संतोष दीदी की उपस्थिति में उत्सव मनाया गया। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में मौन और योग का शक्तिशाली वातावरण बना रहा। प्रत्येक सत्र की शुरुआत एक लघु वीडियो फिल्म से हुई। प्रत्येक समारोह में पवित्रता के दाता बापदादा को एक विशेष राखी भोग दिया गया। इसके बाद सार-पूर्ण क्लास हुई। बीके के एक समूह ने स्टाफ सदस्यों के साथ मैत्रीपूर्ण आध्यात्मिक चिट-चैट उत्सव के लिए सेंट पीटर्सबर्ग में भारत के सामान्य वाणिज्य दूतावास का दौरा किया। कुमार गौरव, महावाणिज्य दूत ने ब्रह्माकुमारीज को धन्यवाद दिया। बहनों ने समझाया कि हमें केवल एक ही पैसा देना है, वह है हमारी कमजोरियों और बुराइयों का बेकार पैसा।

शिव आमंत्रण, झाबुआ/मप्र। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के झाबुआ आगमन पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर जाकर उन्होंने पौधारोपण किया। इस दौरान सेवाकेंद्र प्रभारी बीके जयंती बहन ने उन्हें संस्था द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी।

सेमीनार **यातायात एंव परिवहन प्रभाग का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित**

सड़क दुर्घटना रोकने के लिए मन का संतुलन जरूरी:तिवारी

» शिव आमंत्रण, आबू रोड, राज.। सड़क दुर्घटना रोकने के लिए मन का संतुलन होना जरूरी है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के राजयोग ध्यान से मन एकाग्र हो जाता है और जीवन में सफलता आने लगती है। उक्त उद्गार रेलवे यात्री सलाहकार समिति के अध्यक्ष रमेश चन्द्र रत्न ने व्यक्त किये। वे ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मनमोहिनीवन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि मन को हमेशा संतुलित रखने के लिए राजयोग ध्यान करने की जरूरत है। जितने भी चालक है या कोई भी हो अपने जीवन को सही सलामत रखने के लिए जीवन को संयमित रखे। ब्रह्माकुमारीज संस्थान में आने के बाद यह महसूस होता है कि जीवन कैसा होना चाहिए। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि हम सब परमात्मा के बच्चे हैं। इसलिए हमें कोई भी कार्य करने के पहले परमात्मा को जरूर याद करने का पुरूषार्थ करना चाहिए। जब मन शांत रहेगा तभी हम परिस्थिति को सही तरीके से हैंडल कर सकते हैं। यातायात एवं परिवहन प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा मुम्बई बोरीवली की दिव्य प्रभा, मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करूणा, प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके कुंती, मुख्यालय संयोजक बीके सुरेश शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किये। यह कार्यक्रम तीन दिनों तक आयोजित किया गया।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

'संतुलन और राजयोग'

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। संतुलित, साम्य या साम्यावस्था। अर्थात् दो परस्पर चीजों में साम्य। जीवन अर्थात् शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और आध्यात्मिक रूप से संपन्नता, भरपूरता और परिपूर्णता। संतुलन और समन्वय ही हमें लक्ष्य और सफलता के पथ पर अग्रसर करने में महती भूमिका निभाता है। जीवन के प्रत्येक मोड़ और पड़ाव पर साम्य जरूरी है। जीवन से जुड़े सभी पक्ष दृष्टिकोण, स्तर, सोच, संकल्प और मानसिक स्थिति पर निर्भर करते हैं। मानसिक संतुलन को उच्च अवस्था की ओर ले जाने, स्थायित्व प्रदान कर सम-विषय परिस्थितियों में एक समान बनाए रखने का आधार है आध्यात्म। आध्यात्मिक ज्ञान, मन व उससे जुड़े विकारों और व्याधियों को दूर कर यथा स्थिति में लाने का कार्य करता है। यदि मन असंतुलित है तो जीवन से जुड़े तमाम पक्ष यथास्थिति कार्य नहीं कर सकते हैं। मानव- प्रकृति के बीच संतुलन बिगड़ने के कारण आज प्राकृतिक आपदाएं हमारे सामने हैं।

आध्यात्म से आता है सोच और कर्मों में संतुलन-

आध्यात्म प्रेमियों के जीवन में सोच और कर्मों में साम्य अनिवार्य है। दोनों में संतुलन से ही आध्यात्म की गहराइयों में जाकर आत्मोन्नति के पथ पर निरंतर उन्नति की अनुभूति हो सकती है। साधना के मार्ग पर चल रहे साधकों की सोच से लेकर प्रत्येक कर्म संतुलित हो। कब, क्या करना है, क्या नहीं करना इसका भलीभांति ज्ञान होना जरूरी है। जैसे घड़ी की सूईयों में आपसी सामंजस्य नहीं होने पर वह सही समय नहीं बताती है वैसे ही जीवन में सोच और कर्म में संतुलन नहीं होने पर परिणाम सही नहीं आता है। अति किसी भी चीज की हो दुखदायी ही होती है। आध्यात्म सिखाता है कि कैसे जीवन के तमाम पहलुओं को देखते हुए जीने की कला में निपुण बनें। जीवन जीने की कला का विकास हमें जीवन में आनंद, सुख, शांति की भरपूरता कराते हुए आनंदित करता है। जो पथिक वर्षों से आध्यात्म के मार्ग के राही हैं, इसके बाद भी जीवन में आनंद नहीं है तो फिर से एक बार समीक्षा करने की जरूरत है। जीवन में आध्यात्म है तो उसका प्रतिफल आनंद है। वास्तविक ज्ञान और समझ का अभाव आनंद की अवस्था से दूर कर देता है। आनंद तो मन की एक अवस्था है जिसे लंबे काल के अभ्यास और सही ज्ञान से प्राप्त किया जा सकता है।

जीवन में संतुलन है तो परिणाम स्वरूप आनंद की अनुभूति का एहसास होगा।

राजयोगी जीवन और संतुलन-

राजयोगी जीवन में सुबह उठने से लेकर सोने के लिए एक आदर्श दिनचर्या है। प्रत्येक कर्म के हिसाब से मन की अवस्था का ज्ञान परमात्मा ने दिया है। जब मानस में इस ज्ञान का अभाव और चिंतन का अभाव होता है तो नकारात्मक विचार स्वतः प्रवेश कर जाते हैं। राजयोगी जीवन संतुलित है तो परिणाम स्वरूप आनंद की अनुभूति का एहसास होगा। यदि मर्यादाओं, दिनचर्या में उल्लंघन और श्रेष्ठ संकल्पों का अभाव है तो निराशा, उदासी का भाव भी स्वतः परिलक्षित होता है। राजयोगी जीवन अर्थात् सुबह से लेकर चलना, फिरना, उठना-बैठना-भोजन, कर्म और सोच सभी में संतुलित और संयमित। न जीवनशैली साधारण हो और न उच्च। इस अवस्था में साम्य बनाकर चलना ही सफल जीवन का मार्ग है। जब तक कोई कार्य पूर्ण मनोभाव, लगन, उत्साह और समर्पण भाव के साथ नहीं होगा तो सफलता मुश्किल है। जीवन का ध्येय हो कि जिस कार्य को करेंगे उसमें सफलता प्राप्त करना मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। जब सोच और कर्म में एकरुपता आ जाती है तो जीवन में स्वतः ही आनंद का भाव और संतुलन साकार हो जाता है। राजयोग ही एकमात्र जरिया है जो जीवन में साम्य ला सकता है। वर्तमान परिवेश में हर चीज अति की ओर जा रही है। ऐसे समय में परमात्मा मानव को राजयोग शिक्षा की देकर फिर से संतुलित दुनिया, स्वर्णिम दुनिया, सतयुगी दुनिया में चलने का मार्ग बता रहे हैं। अब यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम इस सत्य को कितने मनोभाव से आत्मसात करते हैं और परमात्मा की दी हुई शिक्षाओं को अपनाते हैं।

शख्सियत

ब्रह्माकुमारीज़ की टीचिंग लॉजिकल है, इस नॉलेज में अंधश्रद्धा की कोई बात नहीं

रामफल पंवार

नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के पूर्व डायरेक्टर ऑफ जनरल

नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के पूर्व डायरेक्टर ऑफ जनरल (डीजी) रामफल पंवार ने शिव आमंत्रण से सांझा किए राजयोग मेडिटेशन और आध्यात्म से जुड़े अनुभव

» शिव आमंत्रण, आबू रोड/राज.। ब्रह्माकुमारीज़ की टीचिंग लॉजिकल है। यहां हर बात को प्रमाण और तर्क-वितर्क के साथ बताया जाता है। इस आध्यात्मिक ज्ञान को सुनने के बाद लोग संतुष्ट हो जाते हैं। मन को शांति और खुशी मिलती है। जीवन से जुड़े तमाम सवालों के हर मिल जाते हैं। यहां बताए गए कालचक्र का ज्ञान और संगमयुग का लॉजिक मुझे बेहद सटीक लगा। इस ज्ञान से तत्काल फायदा मिलता है।

यह कहना है नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरों के पूर्व डायरेक्टर ऑफ जनरल (डीजी) रामफल पंवार का। शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में उन्होंने अपने राजयोग मेडिटेशन और ब्रह्माकुमारीज़ में दिए जा रहे आध्यात्मिक ज्ञान के अनुभव सांझा किए।

उन्होंने बताया कि मैं और मेरा एक दोस्त कोलकाता में रोज सुबह मार्निंग वॉक के लिए जाते थे। वहां रोजाना एक बोर्ड लगा देखते थे तो एक दिन मन बनाया कि अंदर चलकर देखा जाए क्या है। जैसे ही अंदर गए तो वहां ब्रह्माकुमारी बहनों के आत्मीय प्रेम, स्नेह ने बहुत आकर्षित किया। साथ ही सेवाकेंद्र के अंदर के पवित्र, शांत माहौल में असीम शांति की अनुभूति हुई। इसके बाद अक्सर जाना हुआ। फिर सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया।

राजयोग मेडिटेशन एक विज्ञान

मेरा मानना है कि राजयोग मेडिटेशन एक विज्ञान है। इसे आप बाकायदा प्रशिक्षण लेकर सीखने के साथ प्रैक्टिकल में इसके बेनीफिट अनुभव कर सकते हैं। सबसे बड़ी खूबी ये भी है कि राजयोग के लिए आपको कोई विशेष आसन या समय निकालकर बैठने की जरूरत नहीं है। यह तो एक मन को दिशा देने, मन को श्रेष्ठ चिंतन-मनन की ओर ले जाने और सकारात्मक विचारों से भरने वाली एक अवस्था है। राजयोग में हम खुद के साथ खुद का संवाद करना सीख जाते हैं। इससे हमें अपने मजबूत पक्ष और कमजोर पक्ष पता चलते हैं। रोजाना के रुटीन में हमसे कहां मिस्टेक हो रही है, इसका ज्ञान होता है।

कण-कण में भगवान नहीं हो सकते हैं

जैसे ब्रह्माकुमारीज़ में बताया जाता है कि परमपिता परमात्मा एक हैं, वही विश्व के सर्व आत्माओं के परमपिता हैं। वह कण-कण में विद्यमान नहीं हैं। वह आत्मा के परमपिता हैं। जैसे पिता-पुत्र में रिश्ता होता है, वही रिश्ता आत्मा और परमात्मा का है। मेरा भी मानना है कि भगवान जो सुप्रीम पावर है, सर्वोच्च शक्ति है वह कण-कण में कैसे हो सकती है। यह सवाल मेरे मन में बचपन से ही आता था। क्योंकि गंदगी के बीच भगवान कैसे हो सकते हैं? यह बड़ा प्रश्न है। दूसरी बात जब हमारे ऊपर कोई विपरीत परिस्थिति आती है तो हम कहते हैं कि अब ऊपरवाला जाने। यदि कण-कण में भगवान हैं तो उन्हें ऊपरवाला क्यों कहते हैं? मंदिरों में क्यों जाते हैं? जब भगवान यहीं धरती पर हैं तो यह कलियुग कैसे बन गई? कई बाते हैं जिन्हें सभी को गहराई से चिंतन-मनन करने की जरूरत है।

ये ज्ञान तो प्रैक्टिकल के लिए है

युवा पीढ़ी का रुझान आध्यात्म की ओर तेजी से हो रहा है, इसके पीछे आप क्या मानते हैं के सवाल पर उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ से तेजी से पढ़े-लिखे लोगों के पीछे यही कारण है कि यहां जो आध्यात्मिक ज्ञान दिया जाता है, उसमें अंधश्रद्धा जैसी कोई बात नहीं है। यह ज्ञान तो प्रैक्टिकल के लिए है। ज्ञान समझो और जीवन में उतारो। यहां कालचक्र को जो ज्ञान दिया जाता है वह अद्भुत है। एक युग की अवधि 1250 वर्ष है, इसमें भी लॉजिक है। वर्तमान समय संगमयुग चल रहा है, इसमें भी लॉजिक है। गीता में भी कहा गया है कि जब-जब धर्म की ग्लानि होती है, तब-तब मैं इस भारत में आता हूं।

आध्यात्म की कमी से रहता है भय

भय का मूल कारण क्या है? सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि आध्यात्म की कमी के कारण ही असुरक्षा और भय का माहौल है। जब हमारी लाइफ में आध्यात्मिकता होगी तो भय, असुरक्षा और अशांति के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता है। यहां चार दिवसीय ट्रेनिंग लेकर जवान खुशी, शांति का मूलमंत्र लेकर जा रहे हैं। गुस्सा करना मतलब खुद को सजा देना है।

अधिकारियों के लिए यह ज्ञान सबसे जरूरी

मेरा मानना है कि यह आध्यात्मिक ज्ञान आज देश की प्रशासनिक व्यवस्था में बैठे अधिकारियों के लिए बेहद जरूरी है। क्योंकि एक अधिकारी की सोच, व्यवहार का असर बड़े पैमाने पर होता है। उससे कई जवान और लोग कनेक्ट होते हैं। अपने जीवन का एक अनुभव बताते हुए पूर्व डीजी पंवार ने कहा कि एक बार मैंने अपने अधिकारी को डांट दिया। जब मैं बाद में शांति में बैठा तो मुझे महसूस हुआ कि मैंने वेबजह ही उसे डांटा है, वह बात प्यार से भी कह सकता था। फिर मैंने फोन करके उससे सॉरी कहा तो उसे आश्चर्य हुआ। राजयोग के अभ्यास से मेरा जहां गुस्सा कम हुआ वहीं अधीनस्थों के प्रति व्यवहार और रवैया भी बदल गया। परिवार का माहौल भी खुशनुमा हो गया है।

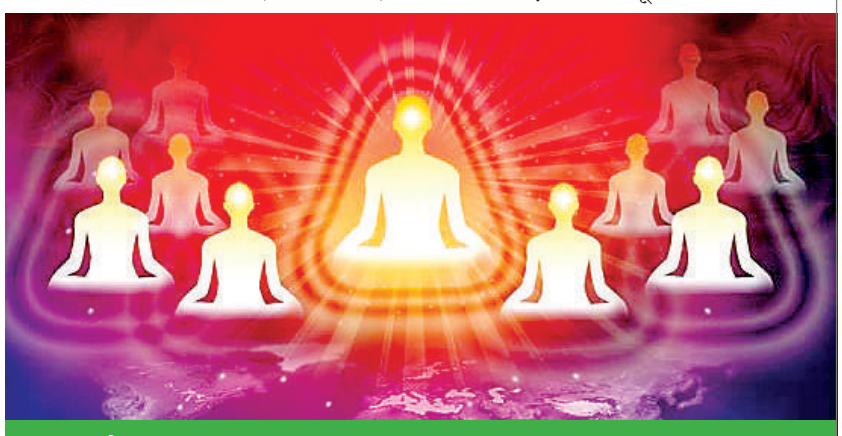

संदेश- वर्तमान में आध्यात्मिक ज्ञान की सबसे ज्यादा जरूरत युवाओं को है, क्योंकि युवा के सामने भविष्य के सपने होते हैं। जब सपने पूरे नहीं हो पाते हैं तो वह धैर्य खो देते हैं और तनाव, चिंता, डिप्रेशन में आकर हताश-निराश हो जाते हैं। आध्यात्मिक से मनोबल बढ़ने के साथ मन शक्तिशाली होता है। हम चुनौतियों का सामना बेहतर तरीके से कर पाते हैं।

दिल्ली की सबसे बड़ी होटल के मालिक होने के बाद भी खुद के हाथ का बना करते हैं भोजन

सादगी की मिसालः होटल में कभी नहीं किया भोजन, सदा सात्विक और बिना प्याज-लहसुन का ही भोजन करते हैं

900 करोड़ की होटल के हैं मालिक

04 बजे ब्रह्ममुहूर्त में करते हैं राजयोग ध्यान

23 साल पहले शुरू किया था होटल बिजनेस

08 साल में दस ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र खुलवाए

18 ब्रह्माकुमारी बहनों को समर्पित कराने के निमित्त बने

» शिव आमंत्रण, **आबू रोड/राज.।** दिल्ली की सबसे बड़ी फाइव स्टार सेवन सीज होटल के मालिक। एक हजार करोड़ की संपत्ति। इसके वाबजूद रहन-सहन साधारण। खुद के हाथ का बना शुद्ध सात्विक बिना प्याज-लहसुन का भोजन और अलसुबह 4 बजे से ब्रह्ममुहूर्त में योग-साधना। ये दिनचर्या है दिल्ली के सबसे बड़े होटल व्यवसायी बीके पूरनचंद की। बीकॉम तक पढ़े 1 अक्टूबर 1955 को जन्मे पांच भाइयों में सबसे बड़े पूरनचंद का पूरा परिवार आज भी संयुक्त रूप से रहता है। इतना बड़ा परिवार और कारोबार होने के बाद भी आज भी पांचों भाइयों में आपसी स्नेह, प्यार अपनेआप में मिसाल है। 900 करोड़ की होटल के मालिक होने के बाद भी आपने कभी होटल में भोजन नहीं किया है। इसके पीछे की वजह है आपके जीवन का नियम-संयम। शिव आमंत्रण में विशेष बातचीत में आपने अपने जीवन के अनछुए पहलुओं को उजागर किया, बातचीत के प्रमुख अंश...

राजयोग से नींद की दवा छूट गई

बीके पूरनचंद ने बताया कि आज से 22 साल पहले ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के संपर्क में आया था। यहां का ज्ञान लेने के बाद मेरा जीवन के प्रति नजरिया ही बदल गया। पहले जहां भौतिकतावादी था वहीं अब अंतर्मुखी हो गया। धर्मपत्नी के शरीर छोड़ने के बाद मैं तनाव में आ गया था। जैसे ही कमरे में पहुंचता तो पत्नी की फोटो देखकर रोना आता था। तनाव इतना बढ़ गया था कि दवा लेने के बाद ही नींद आती थी। क्योंकि बेटा-बेटी दोनों की उम्र छोटी ही थी लेकिन ब्रह्माकुमारी दीदियों के मोटिवेशन और मार्गदर्शन से इस दुःख से उबर आया। राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास से कुछ ही दिनों में मेरी नींद की दवा छूट गई। दोनों बच्चों को माता और पिता का प्यार दिया।

हर सप्ताह आता था माउंट आबू

पहले मैं हर महीने में अपना कारोबार छोड़कर यहां एकांत में समय बिताने के लिए एक सप्ताह के लिए आता था। इस दौरान यहां पूरे समय योग-साधना में ही समय बीतता था। जब मैं घर पर होता था तो बिजनेस रात 2 बजे तक चलता था फिर भी मैं सुबह 7 बजे ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र पर ज्ञान मुरली सुनने के लिए पहुंच जाता था। आज सेवन सीज होटल का कारोबार मेरे छोटे भाई और बेटा-भतीजे मिलकर संभालते हैं। मैंने सिर्फ अपने पास एक गेस्ट हाउस रखा है। इसमें जो भी आय होती है उसे सेवा में लगा देता हूं। परमात्मा का शुक्रिया मानता हूं कि उन्होंने मुझे आठ साल के अंदर में दस सेवाकेंद्र और 50 ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला खोलने के निमित्त बनाया। साथ ही 18 ब्रह्माकुमारी बहनों का समर्पण करवाया।

संदेशः मेरा सभी के लिए यही संदेश है कि हमारे पास कितने भी अपार भौतिक धन, सुख-सुविधाएं हों लेकिन जब तक मन शांत नहीं है। जीवन में सुकून नहीं है तो सब व्यर्थ है। भले आपके पास धन कम हो लेकिन जीवन में सुख-शांति महत्वपूर्ण है। राजयोग मेडिटेशन अपनाने के बाद मेरे जीवन को जैसे पंख लग गए हैं। खुद को भाग्यशाली समझता हूं कि मुझे परमात्मा का सत्य परिचय मिला।

■ RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021-23, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 October 2022
■ स्वामीः राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन ■ प्रकाशक, संपादक व मुद्रक : ब्र.कु. कोमल द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित ■ संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र